ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

आषाढ २०७९ जुलाई २०२२

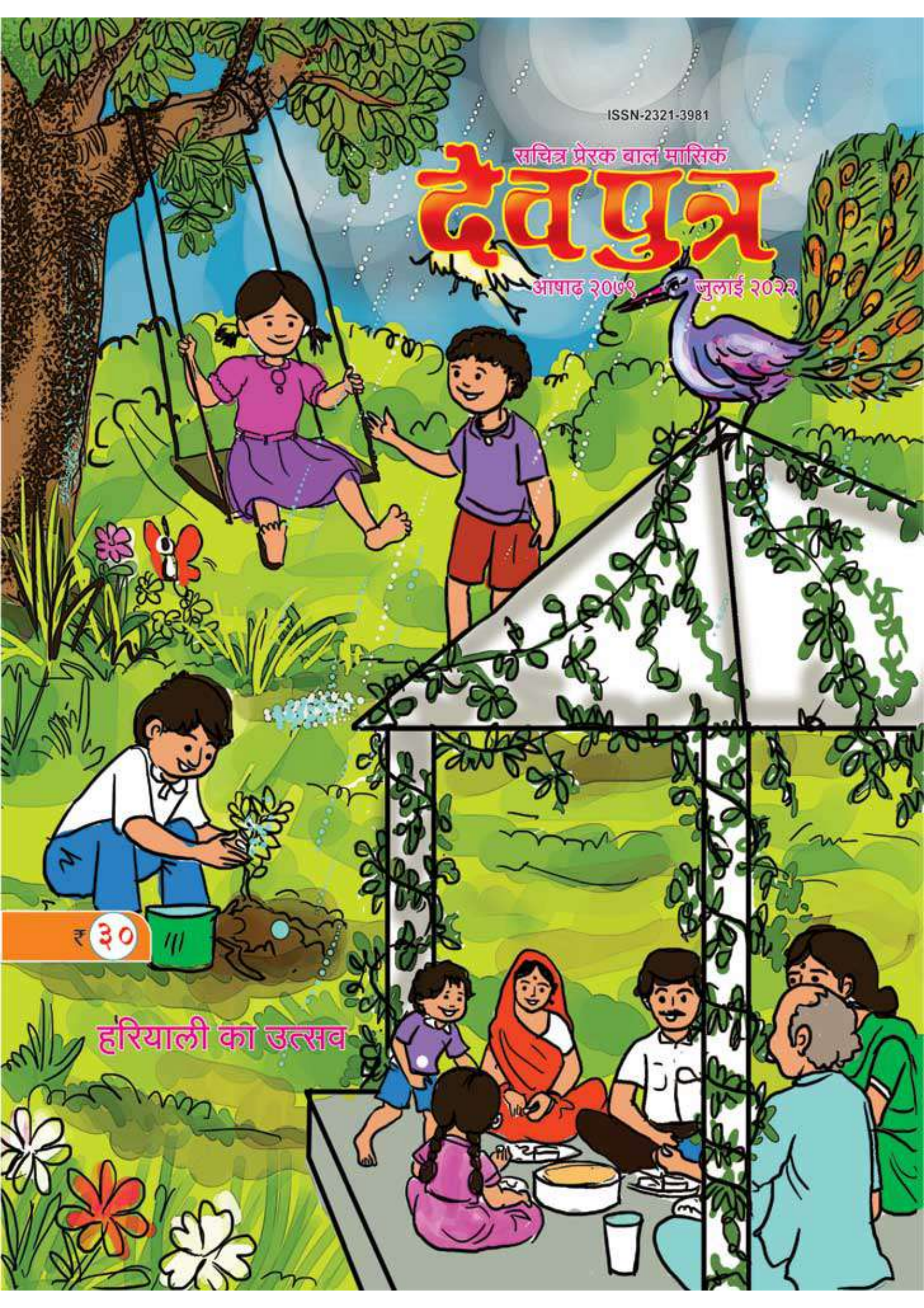

₹ ३०

हरियाली का उत्सव

स्वाद कहाँ से लाऊँ?

– भाऊराव महंत

लड्डू, पेड़ा, सोनपापड़ी,
रबड़ी, काजू कतली।
खाजा, गुझिया, मोदक, पेठा,
बर्फी पतली–पतली।।

बालूशाही, चमचम, बूंदी,
घेवर, नानखटाई।
अरे! जलेबी और इमरती,
बहिन–बहिन है भाई।।

मालपुआ, रसगुल्ला, हलवा,
छेना, गजक, अनरसे।
चिक्की, काले गुलाबजामुन,
खाने को मन तरसे।।

हर प्रकार के मिष्ठानों के,
सुंदर चित्र बनाऊँ।
लेकिन बाबा! उन चित्रों में,
स्वाद कहाँ से लाऊँ?

–बटरमारा, बालाघाट (म. प्र.)

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

आषाढ़ २०७९ ▪ वर्ष ४३
जुलाई २०२२ ▪ अंक ०१

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फड़के

मानद संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	३० रुपये
वार्षिक	:	२०० रुपये
पन्द्रहवर्षीय	:	२००० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१५० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

इस माह गुरुपूर्णिमा का पावन प्रसंग है तो क्यों न अपनी बात भी एक महान गुरु पर ही की जाए। मैं चुन रहा हूँ गुरु द्रोणाचार्य को। आप चौकेंगे कि अपने एक शिष्य 'अर्जुन' को दिए वरदान की रक्षा की आड़ में एक उपेक्षित शिष्य 'एकलव्य' का अँगूठा ही माँग लेने वाले द्रोण महान गुरु कैसे? सोचिए सच्चा गुरु कौन? वही न, जो प्रत्येक प्रतिभावान शिष्य को उसकी सम्पूर्ण प्रतिभा के विकास का अवसर दे और उसके मार्ग की बाधाएँ दूर करने में सहायक हो। जिस युग की यह घटना है वह घोर प्रतिद्वंद्विता (Tough Competion) का युग था। राजनैतिक स्वार्थों के चलते भाई-भाई का बैरी बन रहा था। ऐसे में 'एकलव्य' की असाधारण प्रतिभा का समस्त राजपुत्रों के सामने अनायास प्रकट हो जाना उसके प्राण व प्रतिभा पर कितना बड़ा संकट हो सकता था यह कल्पना की जा सकती है।

गुरु तो शिष्य की विलक्षणता को पल में पहचान गए थे। जो मूर्ति को गुरु बनाकर भी इतनी उत्तम विद्या सीख ले और इतना दयालु भी हो कि अभ्यास में कुत्ते के भौंकने से हो रहे, व्यवधान को रोकने हेतु बिना रक्तपात मात्र उसका मुँह बंद करे, उसे मार नहीं डाले, वह साधारण शिष्य हो ही नहीं सकता। गुरु द्रोण ने परम्परागत पुराने प्रयोगों को ही सिद्ध कर सन्तुष्ट रहने वाले एक सौ पाँच राजपुत्रों की तुलना में एकलव्य को अँगूठे का प्रयोग न करने (दान में ले लेने) का आदेश देकर, ईर्ष्यालु राजपुत्रों को उसे अपना प्रतिद्वंद्वी बनने के दुर्भाव से दूर कर दिया। एकलव्य को उस नवाचार से अपनी विद्या को साधने का संकेत दे दिया, जो इसके पहले तब तक किसी ने न किया था। द्रोण यदि उसे धनुर्धर बनने से ही रोकना चाहते तो अँगूठा क्यों, उसका धनुष ही माँग लेते। धनुर्विद्या का प्रयोग न करने का वचन ले लेते। जैसे परशुराम जी ने कर्ण को दिया था कि 'सर्वाधिक आवश्यकता के समय तुम अपनी विद्या भूल जाओगे ऐसा कोई शाप दे देते। नहीं, उन्होंने उसे नवीन पद्धति का अनुसंधान करने का अवसर दिया। स्वयं प्रत्यक्षत: अपयशी बन गए पर शिष्य को उसकी प्रतिभा सहित सुरक्षित रखा। किसी ने सही ही कहा है- **'गुरु सम को उदार जग माहिं'** संसार में गुरु से अधिक उदार कौन है? बस गुरुभक्ति अविचल होनी चाहिए।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

।। अनुक्रमणिका ।।

कहानी

- बरसेगा बादल -संजीव जायसवाल 'संजय' ०५
- मन और विज्ञान -अनुपमा 'अनुश्री' १६
- बादलों के देश में -तारादत्त जोशी २०
- चुन्नी मुन्नी की साहसिक यात्रा -डॉ. शील कौशिक २८
- वीनू का बदलाव -प्रभा पारीक ४४
- एस. के. -समीर गांगुली ४७

छोटी कहानी

- गलतियाँ हमारी गुरु -शैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी ३२
- दादू यह मेरा कर्त्तव्य था -बलविन्दर सिंह 'बालम' ३६

नाटक

- इन्द्रधनुष की छटा... -डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल ०८

संवाद

- वैज्ञानिक की कोरोना... -डॉ. मनमोहन प्रकाश श्रीवास्तव ४०

लघुकथा

- इशारा -राम मूरत राही ३०
- जारी है सीखना -मनोहर चमोली 'मनु' ३५

प्रसंग

- आजाद का बचपन -अभय मराठे १४

कविता

- स्वाद कहाँ से लाऊँ? -भाऊराव महंत ०२
- कविता पहेली -महेन्द्र कुमार वर्मा १५
- लोरी -डॉ. अलका अग्रवाल ४६

स्तंभ

- थोड़ी थोड़ी डॉक्टरी -डॉ. मनोहर भण्डारी १२
- विज्ञान व्यंग्य -संकेत गोस्वामी १३
- सच्चे बालवीर -रजनीकांत शुक्ल २४
- आपकी पाती २६
- पुस्तक परिचय ३४
- अशोक चक्र : साहस का सम्मान ३७
- बालसाहित्य की धरोहर -डॉ.नागेश पाण्डेय 'संजय' ३८
- गोपाल का कमाल -तपेश भौमिक ४२
- छः अंगुल मुस्कान ४६
- शिशु गीत -रामावतार चेतन ५०

बौद्धिक क्रीडा

- बढ़ता क्रम -देवांशु वत्स १९
- अंक चित्र बनाना -चाँद मो. घोसी २७

चित्रकथा

- खेलो खेल -संकेत गोस्वामी ११
- भरोसा -संकेत गोस्वामी २३
- बालश्रम -देवांशु वत्स ३१
- तेरे पौधे मेरे पौधे -देवांशु वत्स ५१

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।

विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टैट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - **"मन्दसौर संजीत मार्ग SSM"** आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

कहानी

बरसेगा बादल

– संजीव जायसवाल 'संजय'

ठंडी-ठंडी हवा बह रही थी। उसके संग आसमान में एक नन्हा सा बादल उड़ता चला जा रहा था। आज वह पहली बार पानी बरसाने निकला था। उसने सोच रखा था कि वह दूर, इतनी दूर जाकर बरसेगा जहाँ आज तक कोई न बादल गया हो।

वह हवा के साथ उड़ता जा रहा था। घने जंगल, ऊँचे-ऊँचे पहाड़, हरे-भरे मैदानों को पार करता हुआ। उसने नदियों में नाव चलाते नाविकों को देखा तो बहुत प्रसन्न हुआ। खेतों में फसल बोते किसानों को देखा तो बहुत आनंद आया। मैदानों में बच्चों को खेलते देखा तो खुशी से झूम उठा।

नन्हा बादल हवा के साथ चला जा रहा था। धीरे-धीरे कई दिन बीत गए। एक दिन उसने देखा कि एक शहर में एक गाड़ी के सामने भारी भीड़ जमा है और लोग आपस में धक्का-मुक्की कर रहे हैं।

''अरे! यह लोग लड़ क्यों रहे हैं?'' बादल ने पूछा।

''इस गाड़ी में पानी आया है, उसे लेने के लिए लोग लड़ रहे हैं।'' हवा ने बताया।

''दुनिया में इतना पानी भरा है और ये लोग पानी के लिए लड़ रहे हैं?'' बादल आश्चर्य से भर उठा।

''पानी के लिए तो अब हर जगह लड़ाई होने लगी है।'' हवा ने बताया

''लेकिन पानी तो नि:शुल्क मिलता है। उसके लिए लड़ाई क्यों होती है?'' बादल का आश्चर्य बढ़ता जा रहा था।

''तुम अभी छोटे हो यह बात नहीं समझ सकोगे।'' हवा ने कहा और उसे आगे चलने का संकेत किया।

बादल आगे बढ़ने लगा, हवा के साथ वह आसमान में उड़ता रहा। एक दिन उसने अनुभव किया कि नीचे भूमि पर हरियाली कम होती जा रही है, थोड़ा और आगे बढ़ने पर ''वह कैसे?'' नन्हें बादल

ने पूछा।

''क्या तुम जानते हो कि बादलों का जन्म कैसे होता है?'' बादलों के राजा ने उत्तर देने के बजाय प्रश्न किया।

''जानता हूँ महाराज!'' नन्हें बादल ने सिर हिलाया फिर बोला– ''सूरज की गर्मी से नदी, तालाबों और समुद्र का पानी वाष्प बनकर उड़ता है और ऊपर जाकर बादल बन जाता है।''

''शाबाश!'' बादलों के राजा ने उसे प्रशंसा भरी दृष्टि से देखा फिर बोले– ''क्या तुम यह भी जानते हो कि बादल बरसते कैसे हैं?''

''हवा की ठंडक और नमी से हम बादलों के भीतर की पानी की बूँदें जम जाती हैं और नीचे गिरकर बरसने लगती हैं।'' नन्हें बादल ने बताया।

''बिलकुल सही कहा तुमने।'' बादलों के राजा ने शाबाशी दी फिर बोले– ''मनुष्यों ने अपने स्वार्थ के चलते जंगलों और पेड़ों को काट डाला है। इससे पृथ्वी की हरियाली समाप्त होती जा रही है और वहाँ की हवा भी गर्म होती जा रही है। इसके कारण हम बादलों में पानी की बूँदें जम नहीं पाती हैं और हम बरसात नहीं कर पाते।''

''इसका मतलब जहाँ पर पेड़ जितने कम होंगे वहाँ बरसात उतनी ही कम होगी?'' नन्हें बादल ने पूछा।

''हाँ!'' बादलों के राजा ने सिर हिलाया फिर दुःख भरे स्वर में बोले– ''यदि मनुष्य इसी प्रकार पेड़ों को काटता रहा तो बरसात न होने के कारण एक दिन यह पूरी पृथ्वी रेगिस्तान में बदल जाएगी।''

''यह तो बहुत बुरा होगा।'' नन्हें बादल का हृदय काँप उठा।

''हाँ बहुत बुरा होगा। मैं प्रार्थना करता हूँ कि मनुष्यों को सद्बुद्धि आए और वह पेड़ों को काटने के बजाय उन्हें लगाना शुरू कर दे।'' बादलों के राजा ने कहा।

''मैं भी यही प्रार्थना करूँगा।'' नन्हें बादल ने कहा और वहाँ से चल दिया।

''तुम अब कहा जा रहे हो?'' बादलों के राजा ने पूछा। पर रेगिस्तान नजर आने लगा। दूर–दूर तक रेत फैली हुई थी। हवा भी अब काफी गर्म होने लगी थी।

''यहाँ पर हरियाली दिखाई क्यों नहीं दे रही और इतनी गर्मी क्यों हो रही है?'' बादल ने पूछा।

''यहाँ पर पानी नहीं बरसता है इसलिए हरियाली समाप्त हो गई है। चारों और रेत ही रेत फैली हुई है इसलिए इतनी गर्मी हो रही है।'' हवा ने बताया।

''यह तो गलत बात है बादलों को तो हर जगह बरसना चाहिए। वे ऐसा अन्याय क्यों कर रहे हैं?'' बादल ने पूछा।

''मेरा काम तो तुम बादलों को जहाँ चाहो वहाँ तक पहुँचाना है। तुम लोग कहीं बरसते हो और कहीं क्यों नहीं बरसते यह मैं नहीं जानती।'' हवा ने

बताया।

यह सुन नन्हें बादल का चेहरा गंभीर हो गया। उसने तय कर लिया था कि वह इस अन्याय का पता लगाकर रहेगा। कुछ सोचकर उसने कहा– ''वापस चलो मैं बादलों के राजा से पूछूँगा कि उनके राज्य में ऐसा अन्याय क्यों हो रहा है।''

''लेकिन आज तक कोई बादल वापस नहीं गया है। जो एक बार घर से निकला उसे बरसना ही पड़ता है।'' हवा ने बताया।

''लेकिन मैं तो वापस जाऊँगा।'' नन्हें बादल ने जिद ठान ली। हवा ने उसे बहुत समझाया लेकिन वह नहीं माना। हारकर हवा उसे लेकर वापस लौट पड़ी। कई दिनों की यात्रा कर वे बादलों के राजा के पास पहुँचे।

''अरे! तुम बिना बरसे वापस क्यों लौट आए?'' बादलों के राजा उसे देखते ही चौंक पड़े।

''महाराज! मैंने देखा कि कई स्थानों पर लोग पानी की कमी के कारण लड़ रहे हैं। रेगिस्तान में तो कई वर्षों से पानी ही नहीं बरसा। मैं जानना चाहता हूँ कि आपके राज्य में यह अन्याय कैसे हो रहा है?'' नन्हें बादल ने हाथ जोड़ते हुए कहा।

यह सुन बादलों के राजा का चेहरा गंभीर हो गया। कुछ देर विचार करने के बाद उन्होंने कहा– ''हाँ, यह अन्याय तो है लेकिन इसके लिए दोषी हम नहीं किन्तु मनुष्य स्वयं है।''

''मैंने सुना है कि विद्यालयों में कुछ समझदार बच्चों ने पौधे लगाए हैं। मैं वहाँ पानी बरसाने जा रहा हूँ ताकि वे पौधे हरे–भरे हो सके।'' नन्हें बादल ने कहा।

''शाबाश! यह बहुत अच्छा काम होगा।'' बादलों के राजा ने कहा फिर सांस भरते हुए बोले, ''अब तो तुम बच्चों से ही आशा है कि शायद तुम लोग पृथ्वी को एक बार फिर से हरा–भरा कर सको।''

''बिलकुल हम लोग ऐसा ही करेंगे।'' नन्हें बादल ने हाथ जोड़कर प्रणाम किया और वापस चल दिया।

उसकी बात सुनकर हवा भी बहुत प्रसन्न थी। वह नन्हें बादल को शीघ्र से शीघ्र वहाँ पहुँचा देना चाहती थी जहाँ नन्हें–मुन्ने बच्चों ने पौधे लगाए थे।

– लखनऊ (उ. प्र.)

इंद्रधनुष की छटा निराली

– डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल

पात्र–परिचय

आयुष – बड़ा भाई, आयु १८ वर्ष।

अरुण – छोटा भाई, आयु १२ वर्ष।

चिराग – मित्र, आयु १७ वर्ष।

विकास – मित्र, आयु १६ वर्ष।

(परदा खुलता है। मंच पर खुले मैदान का दृश्य। दो मित्र विकास और चिराग पतंगबाजी का आनंद ले रहे हैं। अरुण भी अपने बड़े भाई आयुष के साथ वहाँ पहुँचता है।)

अरुण– देखो भैया! विकास की पतंग आसमान से बातें कर रही है।

आयुष– (अरुण की पीठ थपथपाकर) चिंता क्यों करते हो? हम भी किसी से कम नहीं हैं। (खिल खिलाकर हँसता है।)

अरुण– हाँ भैया! फिर तो खूब मजा आएगा।

आयुष– हम विकास की पतंग से पेंच भी लड़ाएँगे।

अरुण– वाह! आपने तो मेरे मुँह की बात छीन ली। (चिराग बोलता है।)

चिराग– सच, आप हमारी पतंग को काटेंगे?

आयुष– कहो तो, काट भी देते हैं।

चिराग– ठीक है। (आयुष पतंग को ऊँची उड़ाता है। दोनों की पतंगें आपस में भिड़ जाती हैं।)

अरुण– भैया! पतंग को ढील देते जाओ।

आयुष– (प्रसन्न होकर) लो, कट गई विकास की पतंग।

अरुण– भैया! ऊपर आसमान में वह देखो क्या निकल आया है।

आयुष– इंद्रधनुष!

अरुण– इंद्रधनुष?

आयुष– हाँ! वह इंद्रधनुष है।

अरुण– (पतंग को नीचे उतारते हुए) चलो, यही घास पर बैठकर बतियाते हैं।

(चारों मैदान में उगी हरी घास पर बैठ जाते हैं।)

आयुष– (हवा में हाथ घुमाते हुए) इंद्रधनुष को अंग्रेजी में रेनबो (Rainbow) के नाम से पुकारा जाता है। यह लैटिन भाषा के (Arcus Pluvius) नामक शब्द से बना है। जिसका अर्थ होता है– वर्षा की चाप।

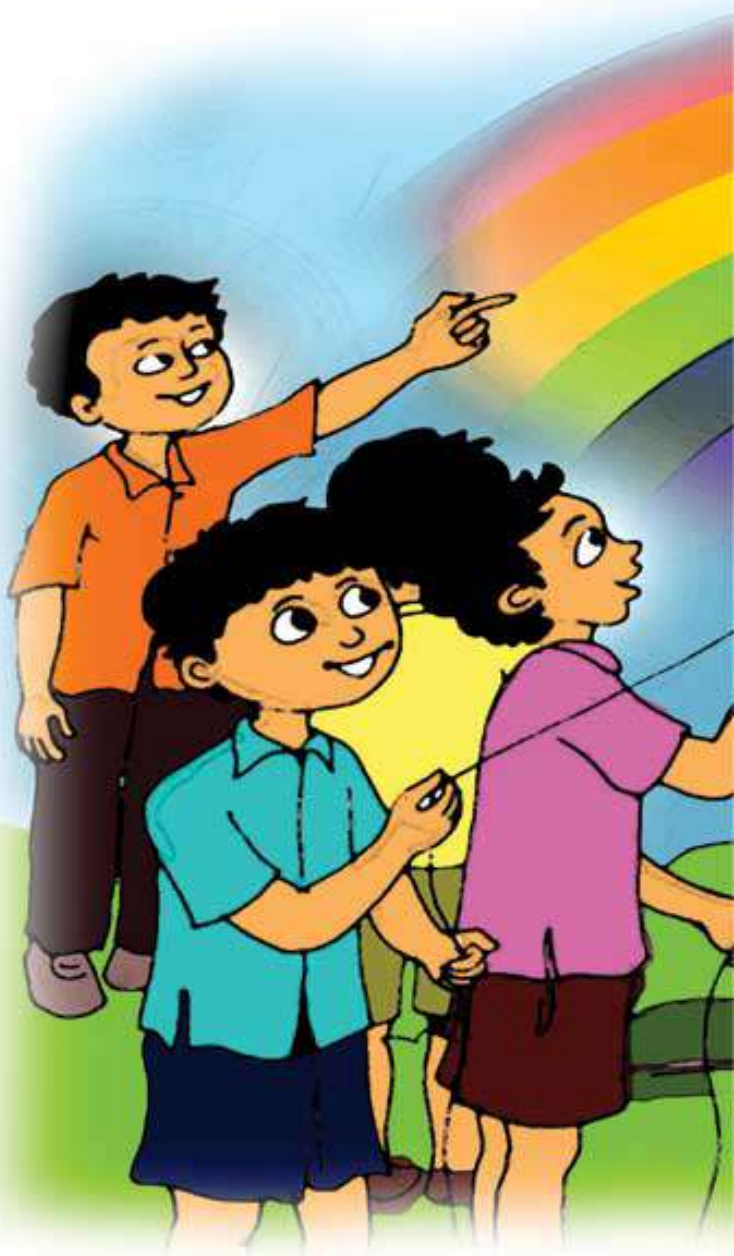

अरुण– वाह!

आयुष– इंद्रधनुष प्रकृति का सर्वोत्तम उपहार है। इसका आकार अर्धचाप की तरह से होता है। जरा ध्यान से देखो ऊपर की ओर!

अरुण– (हामी भरते हुए) सच! इंद्रधनुष की छटा क्या निराली है, मन को मोहने वाली है। यह कितना विशालकाय है देखने में।

आयुष– (विस्मय से) इंद्रधनुष में तो कई रंग हैं। जानते हो कितने?

अरुण– बताओ, बताओ!

आयुष– इंद्रधनुष में सात रंग होते हैं– बैंगनी, नीला, आसमानी, हरा, पीला, नारंगी और लाल। इंद्रधनुष रंगों का यही क्रम मिलता है। इन रंगों का तरंग दैर्घ्य भी भिन्न होता है।

विकास– 'तरंग–दैर्ध्य' क्या होता है?

आयुष– किसी माध्यम के किसी कण के एक पूरा कंपन किए जाने पर तरंग जितनी दूरी तय करती है, उसे ही 'तरंग–दैर्ध्य' कहा जाता है।

चिराग– इन सात रंगों का तरंग–दैर्ध्य कितना होता है?

आयुष– बैंगनी रंग का ४००–४४० नैनोमीटर, नीले रंग का ४४०–४६०, आसमानी रंग का ४६०–५००, हरे रंग का ५००–५७०, पीले रंग का ५७०–५९०, नारंगी रंग का ५९०–६२० और लाल रंग का सबसे अधिक यानी ६२०–७२० नैनोमीटर।

अरुण– लेकिन इंद्रधनुष प्रतिदिन क्यों नहीं दिखाई पड़ता है हमें?

आयुष– अच्छा प्रश्न किया है। दरअसल, इंद्रधनुष वर्षा के रुकने और धूप निकलने पर ही दिखाई देता है। जब सूर्य के प्रकाश की किरणें वायुमंडल में उपस्थित जल की बूँदों से होकर गुजरती हैं, तभी इंद्रधनुष प्रकट होता है और हाँ, इसके लिए सूर्य का आकाश में क्षितिज के पास होना आवश्यक है।

(कुछ देर रुककर।)

आयुष– जानते हो इस घटना को क्या कहते हैं?

अरुण– नहीं, मुझे नहीं पता।

आयुष– प्रकाश का विक्षेपण। इंद्रधनुष का बनना प्रकाश के विक्षेपण पर ही आधारित है। तुम एक छोटा–सा प्रयोग भी कर सकते हो इसे समझने के लिए।

अरुण– कौन–सा प्रयोग?

आयुष– एक प्रिज्म (त्रिपार्श्व) लो। इसमें से प्रकाश की किरणों को गुजरने दो। यह त्रिपार्श्व बूँदों का कार्य करेगा। परिणामस्वरूप, प्रकाश की श्वेत किरण सात रंगों में बँट जाएगी। इन रंगों को 'Vibgyor' के नाम से भी याद रखा जा सकता है। V यानी Violet (बैंगनी), I यानी Indigo (नीला) B यानी Blue (आसमानी), G यानी Green (हरा), Y यानी Yellow (पीला), O यानी Orange (नारंगी) और R यानी Red (लाल)।

अरुण– भैया! इंद्रधनुष किस दिशा में दिखाई देता है?

आयुष– संध्या समय को पूर्व दिशा में और प्रात:काल को पश्चिम दिशा में।

अरुण– क्या इंद्रधनुष एक ही प्रकार का होता है?

आयुष– नहीं! इंद्रधनुष विभिन्न प्रकार के होते हैं– प्राइमरी, डबल, ऐलेक्स जैनडर्स, डार्क, सुपरनुमेरेरी, रेड, क्लाउड, टविंड तथा लूनर।

अरुण– जरा, विस्तार से बताओ।

आयुष– 'प्राइमरी' यानी प्राथमिक इंद्रधनुष को प्राय: देखा जा सकता है। जैसा कि तुम इस समय देख रहे हो।

अरुण– ठीक है भैया!

आयुष– एक ही समय पर जब दो इंद्रधनुष दिखाई पड़ते हैं, तब हम 'डबल' की संज्ञा देते हैं।

अरुण– (गर्दन हिलाकर) वाह!

आयुष– 'ऐलेक्स जैनडर्स डार्क' नामक इंद्रधनुष आसमान में अँधेरा फैला देता है।

विकास– वाह जी वाह!

आयुष– सुपरनुमेरेरी इंद्रधनुष कुछ–कुछ डबल इंद्रधनुष की भाँति ही होता है। नीचे की ओर बनने वाले इस इंद्रधनुष का प्रकाश अधिक रहता है जबकि ऊपर वाले का कम।

चिराग– और रेड?

आयुष– इसमें लाल रंग की अधिकता मिलती है। यह सूर्योदय अथवा सूर्यास्त के समय ही बनता है।

विकास– क्लाउड इंद्रधनुष के विषय में भी प्रकाश डालिए?

आयुष– क्यों नहीं! यह सबसे अधिक सुंदर मान गया है। जो बादलों के ऊपर बनता है। इसका फैलाव भी अधिक रहता है।

(रुककर।)

आयुष– टविंड इंद्रधनुष को सरलता से नहीं देखा जा सकता है। इसमें दो धनुषाकार प्रतिबिंब बनते हैं लेकिन डबल इंद्रधनुष की तरह नहीं।

अरुण– अब बच गया लूनर इंद्रधनुष।

आयुष– इसे सफेद इंद्रधनुष या मून इंद्रधनुष भी कहा जाता है। यह रात के समय चंद्रमा के प्रकाश में ही बनता है। चंद्रमा का प्रकाश जब वायुमंडल में उपस्थित जल की बूँदों पर पड़ती है, तब इसकी उत्पत्ति होती है।

इसका प्रतिबिंब हल्का होने के कारण से इसे खुली आँखों से देख पाना कठिन है।

(सभी बच्चे तालियाँ बजाते हैं।)

आयुष– (प्रसन्न होकर) चलो, अब अपने–अपने घर चलते हैं। अँधेरा होने वाला है।

(नेपथ्य से गीत बजता है।)

सात रंग के इंद्रधनुष का,
तुम्हें सुनाएँ हाल।
प्यारे बच्चो चलो मिलाते,
जरा ताल से ताल।।

(परदा गिरता है।)

– गुरुग्राम
(हरियाणा)

खेलो खेल

गेंद को खुली हुई उल्टी छतरी
में एक उछाल के बाद गिराओ.
गेंद के अंदर रुकने पर 25 अंक मिलेंगे.
कितने भी जने खेलो पर एक
पारी में 3 बार ही गेंद फेंकने दी जाए.

पागल कुत्ते ने काटा

– डॉ. मनोहर भण्डारी

एक दिन सीताराम खेत से घर आ रहा था। एक कुत्ता भौंकते हुए उसकी ओर लपका। सीताराम कुछ करें, उसके पहले ही कुत्ते ने हाथ पर काट लिया।

कुत्ता पहचाना हुआ था। मंगल के खेत के आस–पास घूमता दिखता था। पहले कभी कुत्ता उस पर भौंका या लपका नहीं था।

सीताराम उसी समय रामू के घर गया। रामू घर पर ही मिल गया। उसने साफ पानी और साबुन से घाव को ठीक तरह से धोया। फिर घाव को लाल दवा के तेज घोल से धोया। बाद में उस पर दवा लगा दी।

रामू ने सीताराम से कहा कि– ''कुत्ता यदि दस दिन के पहले मर जाए तो एन्टी रेबीज सुइयाँ लगवानी होंगी। सीताराम ने कहा मुझे तो लगता है कुत्ता पागल हो गया है।

रामू ने कहा कुत्ते को किसी तरह जंगल में ही बाँध दो। यदि वह पागल होगा तो चार–पाँच दिन में ही मर जाएगा। रामू ने आगे बताया कि तुम आज ही किशनगढ़ जाकर डॉक्टर जोशी से मिल लो। टैटनस की सुई लगवाना अति आवश्यक है।

सीताराम डॉ. साहब से मिलने किशनगढ़ जा पहुँचा। डॉक्टर साहब ने टैटनस का टीका लगा दिया।

डॉक्टर जोशी ने सीताराम से कहा कि उस कुत्ते का ध्यान रखो। यदि हो सके तो उसे बाँध दो जिससे वह दूसरों को न काटे। यदि कुत्ता दस दिन के भीतर मर जाए तो तुमको एंटी रेबीज लगवानी पड़ेंगी।

सीताराम मोहनगढ़ आ गया। उसने किसी तरह कुत्ते को बाँध दिया। कुत्ता दो दिन में ही मर गया। रामू ने सीताराम को किशनगढ़ भेज दिया।

वह बहुत घबराया हुआ था। डॉक्टर जोशी ने उसे धीरज बँधाया। फिर उसकी जाँच की और बताया कि तुम भले चंगे हो। बीमारी का असर तुम पर आया नहीं है। सुइयाँ लग जाएँगी तो थोड़ा–सा भी खतरा नहीं रहेगा। सीताराम ने डॉक्टर जोशी साहब की सलाह मानी। उसे एंटी रेबीज इन्जेक्शन लगाए गए। उसे कुछ नहीं हुआ। घाव तो पहले ही ठीक हो चुका था।

(आगे अगले अंक में)

– इन्दौर (म. प्र.)

विज्ञान व्यंग

-संकेत गोस्वामी

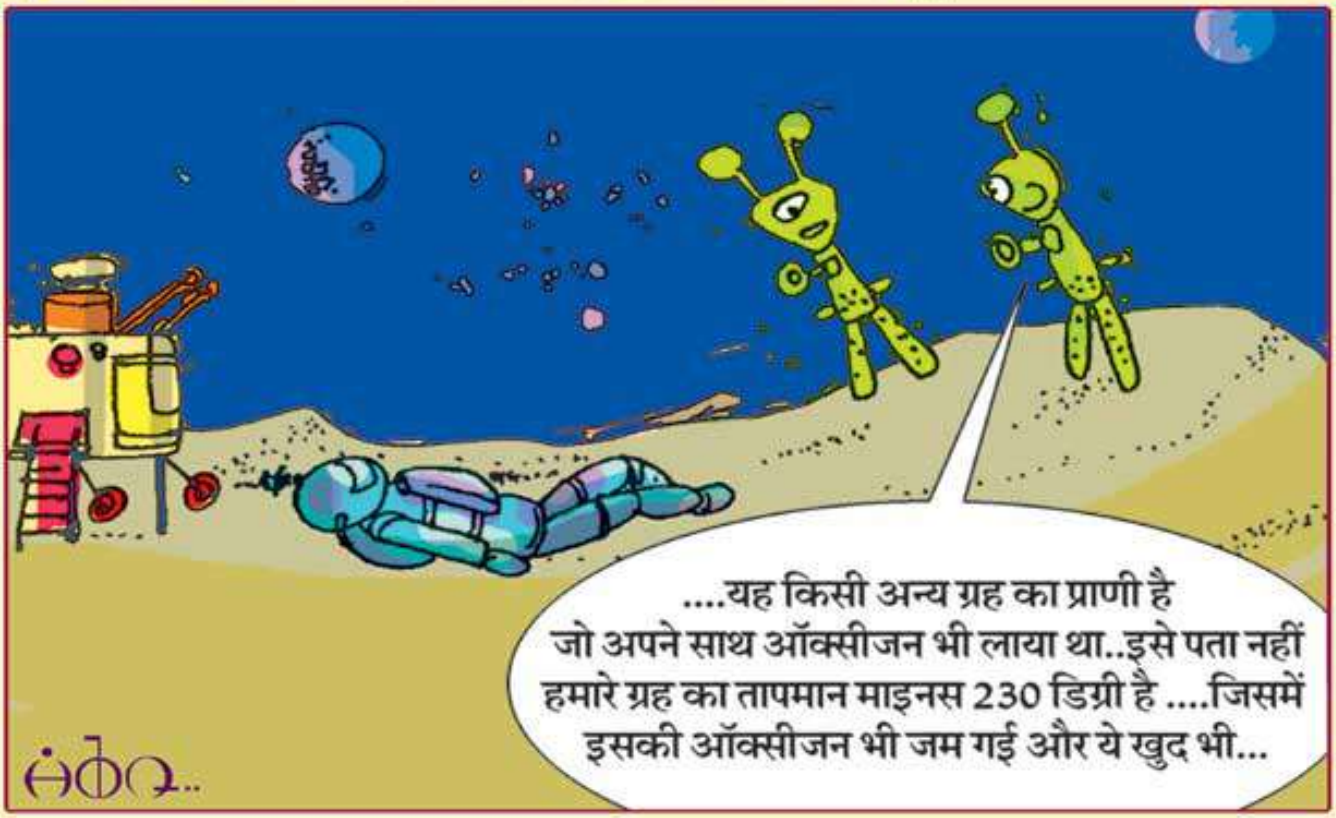

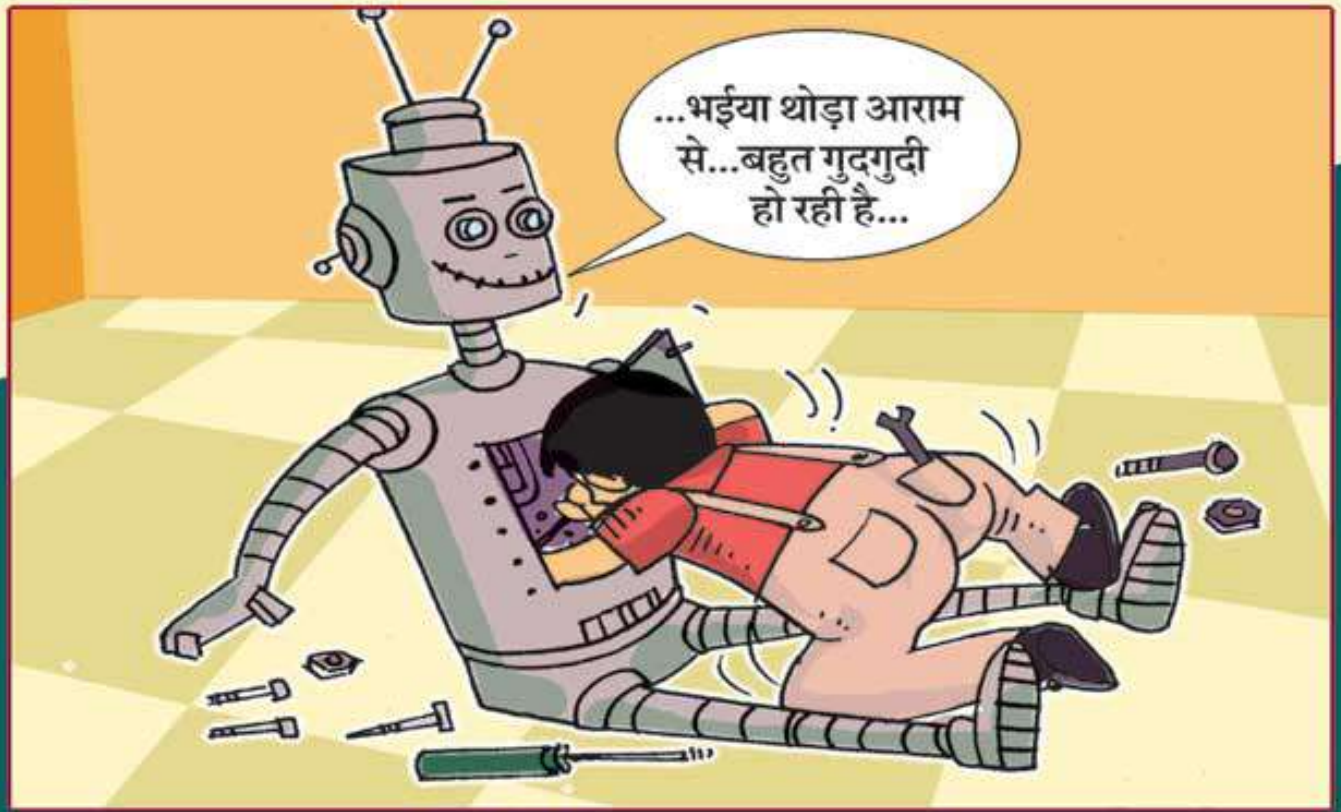

प्रसंग : आजाद जयंती : २३ जुलाई

आजाद का बचपन

– अभय मराठे

वनवासी क्षेत्र में पले–बढ़े, वनवासियों के बीच बचपन और किशोरावस्था में खेले–कूदे चंद्रशेखर तिवारी, उस वातावरण से काफी कुछ सीखे थे।

वनवासी बालक, तीर–कमान के साथ ही, वन में विचरते और छोटे–मोटे जीवों का शिकार करते थे। उनके साथ रहकर, यह ब्राह्मण बालक भी तीर–कमान के लक्ष्य–भेद करने का बहुत अभ्यासी हो गया था। भाबरा में, एक टीले पर, उनके पिता की झोपड़ी थी जहाँ उनका परिवार रहता था। चंद्रशेखर का स्वास्थ्य मजबूत था, लेकिन उस समय उनकी पढ़ाई मात्र, कक्षा चार तक ही हुई थी।

एक दिन, उनके बाल मन में, उमंग पैदा हुई कि, हमेशा क्या इसी एक स्थान पर ही जीवन बिताते रहना है ? मन ऊब गया है। कोई इससे बड़ी, नई जगह भी देखूँ। उन्हें वहाँ, कुछ बनूँ, कमाऊँ, यह उत्साह भी उकसाने लगा। तो चंद्रशेखर अपने घर से निकल पड़े। भाबरा ग्राम से, बालक चंद्रशेखर निकट के रेलवे स्टेशन पर पहुँचे और वहाँ से मुंबई की ट्रेन में सवार होकर अकेले मुंबई पहुँच गए।

मुंबई स्टेशन के बाहर निकलकर अकेले, चकित, संभ्रमित, निठल्ले जैसे, बिना किसी मंजिल के चल पड़े एक ओर। चलते–चलते समुद्र किनारे पहुँचे, जहाँ जहाज आते–जाते रहते थे। उन्होंने देखा कि, कई लोग, रंग के डिब्बे लिए जहाज को रंग रहे थे। वे देखते रहे। थोड़ी देर बाद उनको भूख लगी, सोचो क्या करें ? जो थोड़ी–सी पूँजी थी वह तो रेल यात्रा में ही समाप्त हो गई थी। तब उन्होंने जहाज रंगने वाले से ससंकोच कहा–

''क्या, मैं भी इस कार्य में तुम्हारा कुछ हाथ बँटा सकता हूँ?'' और लग गए, जहाज रंगने के काम में। भीख माँगकर खाना यानी पाप, उनको यही संस्कार तो मिले थे अपने परिवार से। कुछ दिनों,

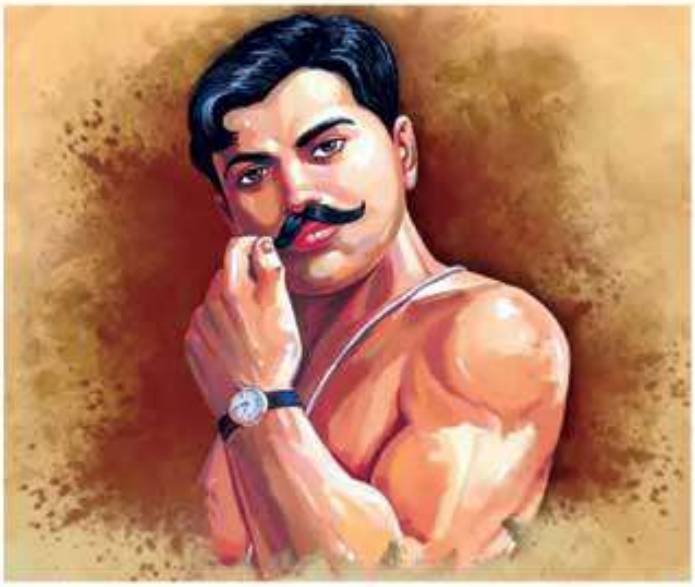

गोदी श्रमिकों के साथ चने खाते हुए, दूध के बड़े–बड़े डिब्बे ढो कर, जहाज पर रखते। चंद्रशेखर भौर पाँच बजे ही जाग जाते थे और श्रमिकों के साथ जहाज पर चले जाते। गोदी श्रमिक, कई बार बिना किसी से पूछे, दूध के एक डिब्बे को अपनी 'खोली' (छोटी कोठरी) में उठा ले आते थे। और तब, उन श्रमिकों का, वही आहार होता था। किन्तु कम आयु होते हुए भी, चंद्रशेखर ने कभी भी, एक भी दूध का डिब्बा वहाँ से नहीं चुराया था। चोरी उनके स्वभाव में न थी।

गोदी श्रमिक, रात–दिन बीड़ी फूँकते रहते थे, ताड़ी–शराब पीते, लेकिन वे उन्हीं के बीच रहते, काम करते, चंद्रशेखर ने बीड़ी–तंबाकू, नशा, शराब को कभी हाथ नहीं लगाया। कीचड़ में रहकर, वे कमल की भाँति खिले रहे। उन्होंने, कभी अपनी प्रकृति, अपनी मौलिकता नहीं खोई। उन्होंने, भाबरा के वनवासी किसानों का जीवन बहुत निकट से देखा, फिर मुंबई के समुद्र तट पर उन्होंने जहाज के 'गोदी श्रमिकों' का जीवन जिया। उदर भरने के लिए इतनी दौड़–धूप। पूरा दिन, जहाज पर ही बीत जाता था।

नहाने तक समय नहीं मिलता था। दूसरे कपड़े भी पास में न थे, कि नहाकर बदलते। उन्होंने एक दिन, मुंबई के चोर बाजार में घूमकर कुर्ता और जांघिया खरीदा। साबुन के लिए पैसे होते तो वह भी

खरीदते। रास्ते में, किसी एक 'बंबे' (नल) के नीचे, रविवार की छुट्टी के दिन, साप्ताहिक स्नान किया। खरीदे गए नए कपड़े पहने और पहले वाले फटे हुए, वहीं उतार कर फेंक दिए।

माँस कभी न खाया। सोने के लिए, गोदी श्रमिकों की खोली में इतनी जगह नहीं थी, लोग बारी-बारी से सोते थे। तब चंद्रशेखर किसी बगीचे में जाकर सोते थे या समुद्र किनारे बैठकर अकेले न जाने क्या-क्या विचार करते रहते। इस प्रकार उन्होंने, अनजानी जगह पर कई महीने बिताए। तब वहाँ कोई नहीं जानता था कि, एक दिन यही बालक, देशवासियों में महान क्रांति-सेनापति 'चंद्रशेखर आजाद' के नाम से प्रसिद्ध होगा।

बालक चंद्रशेखर इस जीवन क्रम से ऊब गया था। एक रविवार, ढाबे में रोटी खाई और स्टेशन पर आकर ट्रेन में बैठ गए। मन में आया, काशी चलें। दादा पंडित सीताराम तिवारी कहते थे, काशी में संस्कृत पढ़ने की अच्छी व्यवस्था है। वहाँ पर, पढ़ाने वाले बड़े-बड़े विद्वान है। जो अभावग्रस्त हैं, उनके लिए अलग भंडारे खुले हैं और रहने की व्यवस्था भी है। यही विचार कर, बिना टिकट यात्रा कर पकड़ में आए बिना, काशी पहुँच गए और संस्कृत विद्यापीठ में भर्ती हो गए। वहाँ उनकी सारी व्यवस्था हो गई।

चंद्रशेखर ने काशी से भाबरा स्थित घर पर चिट्ठी लिखी। मैं, काशी में संस्कृत पढ़ रहा हूँ।

आगे, १४ वर्ष की आयु में, असहयोग आंदोलन में सक्रिय होकर, बंदी बनाए गए। १५ बेंतों का दंड मिला और चंद्रशेखर 'आजाद' कहलाए।

काकोरी केस, सांडर्स वध केस, आपके नेतृत्व में हुआ। एक दिन इलाहाबाद के, अल्फ्रेड-पार्क में, देश की स्वतंत्रता के लिए, क्रांतिवीर चंद्रशेखर 'आजाद' बलिदान हो गए।

– उज्जैन (म. प्र.)

कविता पहेली

एक

– महेन्द्र कुमार वर्मा

गुणकारी अलबेला, मिलता बिना झमेला।
ताकत खूब बढ़ाता, लाता मस्ती रेला।
मीठा स्वाद बढ़ाता, गुड़ शक्कर का चेला।
खुशियों का है मेला, सुनो नाम है.....।

दो

प्यारा लगता मस्त सुहाना,
रक्तिम होता उसका दाना।
खून बढ़ाता सबका मित्रो,
सारी दुनिया ने ये माना।
मन में गजब ताजगी भरता,
लाता खुशियों भरा तराना।
नगद मिले ना मिले उधार,
बच्चे बोलें उसे .....।

उत्तर : केला, अनार

– भोपाल (म. प्र.)

श्रद्धांजलि

वे बालसाहित्य के अग्रणी विज्ञान लेखकों में से थे। लम्बे समय तक विज्ञान लेखन के माध्यम से बाल साहित्य जगत का कोश भरने वाले और बालमनों में विज्ञान चेतना जाग्रत करने वाले आदरणीय **श्री शुकदेव प्रसाद जी** नहीं रहे। २४/१०/१९५४ को उ. प्र. बस्सी में जन्में। इस समर्पित विज्ञान लेखक ने दिनाँक २३/०५/२०२२ को प्रयाग में अंतिम श्वासें ली। देवपुत्र को उनका भरपूर लेखन प्रसाद प्राप्त करने का सुअवसर मिलता रहा है। देवपुत्र परिवार उनके देहावसान पर साधु श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

मन और विज्ञान

– अनुपमा 'अनुश्री'

गर्मियों की छुट्टी का आनंद और रात को सफेद चादरों में छतों पर खुले आसमान के नीचे चंदा–तारों को देखने का जो सुखद–अनुभव है, बड़े नगरों में सबको नहीं मिलता।

हाँ! लेकिन नित्या को यह आनंद मिलता था, जब वह गर्मियों की छुट्टी में अपने दादा–दादी के घर जाती थी। सभी वहाँ छत पर सोया करते थे।

नित्या और उसका कजिन शाश्वत जो बारहवीं की पढ़ाई कर रहा था, तारों को देखते हुए हजारों बातें किया करते। बड़ी जिज्ञासाएँ थी कक्षा सात में पढ़ाई करने वाली नित्या को और शाश्वत हमेशा समझाया करता था।

''हमारी आकाशगंगा कितनी चमकती हुई नजर आ रही है हजारों तारों के साथ है न नित्या!''

''हाँ भैया! मुझे तो अद्भुत रोमांच लगता है यह सब देखना और वह जो एक पतंग की तरह सुंदर आकृति दिखाई दे रही है, उसे क्या कहते हैं।''

''देखो! नित्या हमारी आकाशगंगा सर्पिलाकार है, जिसकी एक भुजा में हमारा सौरमंडल है यानी सूर्य और हमारे सारे ग्रह, जिसमें एक ग्रह पृथ्वी है जिस पर हम रहते हैं। यह तुम आसमान में जो पतंग देख रही हो, यह सप्तऋषि मंडल है।''

''हम इनसे कितनी दूरी पर हैं?''

''अरे रे! हम इनसे बहुत दूरी पर हैं। अगर खगोल शास्त्र के अनुसार देखें, तो यह दूरी प्रकाश वर्ष में मानी गई है। प्रकाश वर्ष प्रकाश के निर्वात में चलने की दूरी है जिससे हम तारों और ग्रहों के बीच दूरी और उनकी आयु को भी नापते हैं। हम से आकाशगंगा की दूरी लगभग दो करोड़ प्रकाश वर्ष से अधिक है।'' शाश्वत ने बताया।

यानी हमारी आकाशगंगा तो बहुत दूर है– ''और यह कितनी पुरानी है, यह भी तो बताओ?''

''नित्या! आकाशगंगा करोड़ों वर्ष पुरानी है और इसमें सभी तारे गुरुत्वाकर्षण शक्ति से आपस में बंधे हुए हैं। यदि अनुमान लगाएँ तो हमारी आकाशगंगा की आयु खगोल विज्ञानियों के अनुसार लगभग तेरह अरब वर्ष है। केवल एक ही गैलेक्सी नहीं बल्कि इस तरह की तमाम आकाशगंगाएँ हैं, जिनकी रोशनी हम तक यहाँ पहुँच रही है।''

''सच! कितना अद्भुत दृश्य है यह टिमटिमाते असंख्य तारे और उनकी झिलमिलाती ज्योति।''

''हाँ! आकाशगंगा के भी कई नाम है– ''जैसे मंदाकिनी, क्षीर मार्ग, देव नदी, स्वर्ण गंगा कहते हैं।''

तभी दादी की आवाज आई– ''आज सारी रात जागते रहोगे। चलो सो जाओ अब, बाकी बातें कल करना।''

''हाँ! दादी।'' दोनों ने कहा।

दूसरे दिन नित्या फिर तैयार थी अपने प्रश्नों के साथ और शाश्वत उत्तर देने के लिए तैयार।

''भाई! कल सप्तऋषि के बारे में हमारी बात अधूरी रह गई थी और मुझे ध्रुव तारे के बारे में भी

जानना है। शिक्षक ने मुझसे बताया था कि ध्रुवतारा एक अटल तारा होता है जिसे आसमान में साफ-साफ देखा जा सकता है। बताओ.. कहाँ है?''

''कल हमने सप्तऋषि मंडल देखा था न पतंग की आकृति में। सात ऋषियों के नाम से इस सप्तऋषि मंडल को जाना जाता है। सप्तऋषि मंडल आकृति में जो आगे के दो तारे हैं, उनकी सीध में उत्तर दिशा में सबसे चमकता तारा दिखाई दे रहा है न, वही ध्रुव तारा है नित्या.. देखो।'' शाश्वत ने अपने हाथ से आकाश की ओर संकेत किया।

और नित्या चारों ओर आँखें घुमा-घुमाकर उस चमकीले तारे को खोजने लगी। आखिरकार उसे ध्रुव तारा दिख गया और वह बहुत प्रसन्न हुई।

''हम इसे अटल तारा या स्थायी तारा क्यों कहते हैं?''

''क्योंकि यह हमेशा उत्तरी ध्रुव की सीधी रेखा पर होता है और इसीलिए **पोल स्टार** कहलाता है। दिशा सूचक है। अपने स्थान को यह नहीं बदलता है, इसीलिए इससे अटल ध्रुव तारा भी कहते हैं और इन अंग्रेजी में **उर्सा माइनर** कहते हैं।''

''अरे नित्या! कुछ मुझसे भी सुन लेना ध्रुव तारे के बारे में। एक पौराणिक कथा है वही सुनाऊँगी तुम्हें-''

दादी इन दोनों की बातें सुन रही थी और मुस्कुरा रही थी।

''अरे... वाह! दादी अवश्य आपसे भी एक दिन सुनूँगी।''

''नित्या! तुम इतना अधिक इन तारों में क्यों उलझ जाती हो?''

''क्योंकि बड़े होकर वैज्ञानिक बनना है न मुझे.. शिक्षक ने कल्पना चावला और सुनीता विलियम्स, टेसी थॉमस मिसाइल वुमन के बारे में बताया है।'' बड़ी अदा से आँखें मटकाती हुई नित्या बोली।

''हाँ! हमारा भारत तो वैदिक काल से ही तमाम खगोलीय पिंडों, आकाशीय घटनाओं का अध्ययन और सटीक भविष्यवाणी करने में सबसे आगे रहा है। आर्यभट्ट, आचार्य वराहमिहिर, भास्कराचार्य ने खगोल विज्ञान और ज्योतिष में कई महत्वपूर्ण आविष्कार किए हैं।

अब तो विज्ञान ने इतनी प्रगति कर ली है कि हम अंतरिक्ष की सैर कर रहे हैं और वहीं चंद्रमा और सूरज पर जाने के लिए मिशन चंद्र और मिशन सूर्य भी शुरू हो रहा है।''

इस तरह बातें करते-करते दोनों को नींद आ गई। नित्या को सपनों में भी लग रहा था कि जैसे वह एक यान में एस्ट्रोनॉट बनी हुई अंतरिक्ष की सैर कर रही है।

सुबह होने पर उसने अपना यह सपना सभी को सुनाया और फिर दादी को सब ने घेर लिया।

क्योंकि नित्या को अब दादी से ध्रुव तारे की कहानी सुनना थी।

दादी ने सुनाना प्रारंभ किया कि- ''राजा उत्तानपाद और सुनीति का एक बेटा था राजकुमार ध्रुव। एक दिन वह राज दरबार में अपने पिता की गोद

और कहा– 'जाकर भगवान की गोद में बैठो।' और ध्रुव जिद पर अड़ गया। भगवान की गोद प्राप्ति के लिए कठोर तपस्या की और अंतत: भगवान प्रसन्न हुए और उन्होंने उसे आशीर्वाद दिया और साथ ही कहा कि– 'मृत्यु उपरांत हमेशा के रूप में चमकते रहोगे और अपनी ईश भक्ति के लिए याद किए जाओगे।' वहीं सप्त ऋषियों को उन्होंने ध्रुव की रक्षा के लिए आदेश दिया। यही कारण है कि सप्त ऋषि मंडल ध्रुव तारे के चारों ओर चक्कर लगाते हैं।''

''अरे! वाह दादी! यह तो सच बात है। बहुत ही अच्छी कहानी है।''

''हाँ, इसी प्रकार से जब तुम अपने गणित और भौतिकी में बढ़िया नंबर लेकर आओगी और अपनी पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित रखोगी, अटल रहोगी, तभी ऊपर आसमान की सैर कर पाओगी।'' दादी मैंने ठीक कहा न– और दादी दोनों की शरारतें करते और छेड़ते हुए मुस्कुरा रही थीं।

''हाँ! ठीक है ठीक है.. वह तो मैं अवश्य ही करूँगी।''

छुट्टियाँ समाप्त होने को आईं। सभी चचेरे भाई–बहिन दादा–दादी के घर से अपने–अपने शहरों की ओर लौट गए।

''पोस्टमैन...!'' बेटा... शाश्वत! देख तो किसी की चिट्ठी आई होगी।''

''हाँ! मैं अभी दरवाजा खोलता हूँ।''

''भोपाल में तुम्हारा पता ढूँढ़ना मुश्किल रहा। पिन कोड नहीं था पते पर।'' डाकिया बता रहा था।

अपने नाम पर आई इस चिट्ठी को उलट–पुलटकर देखते हुए, जब पते पर दृष्टि गई तो शाश्वत चौंका और उसे सुखद आश्चर्य हुआ कि यह चिट्ठी लिखी थी जयपुर से नित्या ने। उसने बड़ी उत्सुकता से लिफाफा खोला और पढ़ना प्रारंभ किया।

''प्रिय भाई! नमस्कार! मैं जयपुर सकुशल पहुँच गई थी और विद्यालय भी शुरू हुए। ईमेल करना चाह रही थी लेकिन पिताजी ने कहा कि तुम चिट्ठी लिखो। देखो.. मैंने यह सुंदर पुराने तरीके से तुम्हें हिंदी में पत्र लिखा है। कैसी लग रही है मेरी लिखावट।''

''हाँ! तो मैं बता रही थी हमारी शिक्षिका हमें ले जाने वाली हैं हमारे शहर के जंतर–मंतर। सुना है यह सबसे पुरानी वेधशाला है। यहाँ मैं सभी यंत्र और दिन में तारे भी देखूँगी... प्रसन्नता की बात!... और मैं अपने साथ डायरी पेन भी रखूँगी ताकि नोट करती जाऊँ कि मैंने वहाँ क्या–क्या देखा और फिर फोन पर बात करूँगी। यही तो है See and Tell.''

भाई! टीचर हमें बता रही थी कि हमें पृथ्वी और आकाशीय पिंडों, चांद–तारे, ग्रह–नक्षत्रों का आपसी तालमेल, उनका हमारे ऊपर प्रभाव और उनके गुणों, गति, उनकी आयु, दूरी और दिशाओं का अध्ययन करना है तो इन वेधशालाओं को अवश्य विजिट करना चाहिए। हमारे राजा सवाई जयसिंह ने इस वेधशाला का निर्माण कराया था और कैसे उन्होंने प्राचीन वैज्ञानिकों के द्वारा दिए गए सिद्धांतों के आधार पर यहाँ घटनाओं के लिए और खगोलीय अध्ययन के लिए यंत्र स्थापित किए हैं जानकर आश्चर्य लगता है।

आपको पता है भाई... हमारी यह ऑब्जर्वेटरी बहुत विशाल है जो यूनेस्को की विश्व धरोहर में भी शामिल है और भाई! यहाँ तो सम्राट यंत्र है। जिसे सूर्य घड़ी कहते हैं और ऐसे ही इन प्राचीन यंत्रों को रेत और लकड़ी, धातु बनाया है। और पता है कि इन यंत्रों की गणनाओं के आधार पर हमारा पंचांग बनता है..।

पत्र पढ़ते–पढ़ते शाश्वत सोच रहा था कि उसने भी तो उज्जैन में जंतर–मंतर देखा है यहाँ से कर्क रेखा गुजरती है और समय का निर्धारण प्राचीन काल से यहाँ से ही होता था।

अपने विचारों से वापस पत्र पर आते ही शाश्वत की नजर पड़ी–

''भाई! सवाई जयसिंह ने केवल जयपुर में ही

नहीं, दिल्ली, मथुरा, उज्जैन और बनारस में भी ज्यामितीय खगोलीय अध्ययन और सटीक घटनाओं का विश्लेषण, भविष्यवाणी करने के लिए इन सभी वेधशालाओं (ऑब्जर्वेटरीज) का निर्माण किया है। सोचो! कितना मजा आएगा जब आप भी साथ आओगे और हम चाँद-तारे, नक्षत्रों को निकट से जानेंगे। यानी संपूर्ण ब्रह्मांड को निकट से देख पा रहे होंगे। और भाई! अब मुझे डांटना नहीं! मैं पिताजी से रोज विज्ञान पढ़ रही हूँ।''

''ठीक है.. अभी यहाँ तक! मैं तैयारी कर रही हूँ जंतर-मंतर की सैर की। सब कुछ तुम्हें अगले पत्र में बताऊँगी। और भाई! मुझे तो सभी वेधशालाएँ देखनी है और इसरो भी तो देखना है मेरी प्रेरणा मिसाईल मैन एपीजे अब्दुल कलाम की कर्म भूमि और उसके बाद तो नासा भी... और अंतरिक्ष की सैर भी तो करनी है शिक्षिका बता रही थी कि जुलाई २०२१ में आँध्र प्रदेश से भारतीय मूल की सिरिशा बांदला भी नासा में अपनी टीम के साथ अंतरिक्ष की सैर पर जा रही है। तो ... अभी के लिए इतना ही। जंतर-मंतर देखने के बाद मैं अपना अनुभव तुम्हें फिर से लिखूँगी।'' शाश्वत नित्या के ऊँचे-ऊँचे सपनों के सच होने की कामना करने लगा। उसे भी डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम के कथन याद आये कि- ''विज्ञान वैदिक साहित्य की तरह है सरस और संवेदनशील।'' और ''छोटे सपने देखना पाप है।''

तभी माँ की आवाज आई- ''अरे! शाश्वत, तुम्हारे मित्र प्रतीक्षा कर रहे होंगे, तुम्हें साईंस प्रोजेक्ट तैयार करना है न!''

''अरे! मैं तो भूल ही गया।'' और शाश्वत मित्रों से मिलने चल पड़ा। सोच रहा था कि इस सृष्टि की कितनी जिज्ञासाओं को मानव मस्तिष्क के ज्ञान और विज्ञान ने शांत किया है, वहीं बहुत सारी सुविधाएँ भी दी हैं। हमें इन सुविधाओं का संतुलन में ही प्रयोग करना चाहिए, पिताजी यही कहते हैं... और साईकिल के दोनों पहियों पर संतुलन बनाते हुए साईकिल दौड़ा दी।

- भोपाल (म. प्र.)

बढ़ता क्रम 09

देवांशु वत्स

1. अवश्य, तक, अधिक।
2. जनसमूह, मजमा।
3. अंदर, मन में, अंतःपुर।
4. अति विशाल।
5. कठोर शपथ।
6. राजा शांतनु और गंगा का पुत्र।

1.	भी					
2.	भी					
3.	भी					
4.	भी					
5.	भी					
6.	भी					

उत्तर: 1. भी, 2. भीड़, 3. भीतर, 4. भीमाकार, 5. भीष्म प्रतिज्ञा, 6. भीष्म पितामह।

बादलों के देश में

– तारादत्त जोशी

सुबह आसमान साफ था। लेकिन दोपहर होते–होते तेज हवाएँ चलने लगी और अचानक आसमान बादलों से घिर गया। गरज के साथ छींटे पड़ने लगे। मोहन डर से अपनी माँजी से चिपक गया और कुछ देर में उसे नींद आ गई और माता जी ने उसे बिस्तर पर लिटा दिया। सोते हुए मोहन ने देखा कि एक तेज हवा के झोंके से वह बादलों के देश में पहुँच गया है। वहाँ बादलों के बच्चे वर्षण का खेल कर रहे थे। मोहन चुपके से उनके पास जाकर खड़ा हो गया। तभी एक बच्चे की दृष्टि उस पर पड़ी और वह बोला–

''नमस्ते! मैं झबरू हूँ। आपका नाम?''

''जी! मेरा नाम मोहन है।''

''मोहन जी! हमारे साथ दोस्ती करोगे? झबरू ने हाथ आगे बढ़ाते हुए कहा, हम तुम्हें अपना देश घुमाएँगे।''

मोहन ने झबरू से हाथ मिलाया तो उसका हाथ पूरा गीला हो गया। उसने आश्चर्य से कहा– ''ओह! हाँ, लेकिन आपके हाथ से यह पानी... और आपका देश कहाँ है?'' तभी सारे बच्चे आ गए और सबने अपना परिचय दिया। साँवली बदरिया, गड़म–बड़म मेघ और अंत में भूरे बालों वाला लड़का आया। वह बोला, ''मेरा नाम भूरा है।'' भूरा ने मोहन को गले लगाया तो मोहन पूरा भीग गया।

मोहन ने पूछा?– ''तुम लोगों के शरीर से पानी क्यों निकल रहा है?''

साँवली बोली– ''हम लोग तो पानी के ही बने हैं।''

भूरा ने झबरू से कहा– ''भैया! चलो हम दोनों मोहन को अपना देश दिखाते हैं।'' साँवली और गड़म–बड़म बोले– ''भैया! हमको भी ले चलो न!''

झबरू बोला– ''नहीं– नहीं, ये गड़म–बड़म शोर बहुत करता है। पिताजी डाँटेंगे।''

''मैं बिलकुल भी शोर नहीं करूँगा, भैया ले चलो न!''

भूरा बोला– ''अच्छा... शोर न करना। चलो चलते हैं। पाँचों एक–दूसरे का हाथ पकड़कर घूमने लगे।

कुछ दूरी पर जाकर भूरा बोला– ''झबरू! ओ देखो! उधर पिताजी गर्जन के साथ बरस रहे हैं। उधर नहीं जाते हैं। कुछ देर हम भी यहीं पर वर्षण का खेल करते हैं।'' सांवली, झबरू, गड़म–बड़म और भूरा

सब मोहन के चारों ओर नाचने लगे और उनके शरीर से वर्षा गिरने लगी।

मोहन– ''झबरू! मुझे भी खिलाओ न वर्षण का खेल!''

भूरा– ''तुम वर्षण नहीं कर सकते हो। क्योंकि तुम्हारा शरीर हाड़–माँस का बना है।''

''तुम्हारा शरीर किसका बना है?'' मोहन ने पूछा।

''हम तो पानी से बने हैं।'' झबरू और भूरा एक साथ बोले।

''ओह! तुम्हारा शरीर पानी से कैसे बनता है?''

''चलो मित्र! तुमको दिखाते हैं, हम पानी से कैसे बनते हैं। देखो नीचे!''

मोहन ने नीचे को देखा तो उसे नीचे नीली गोल गेंद–सी दिखाई दी। उसने पूछा, यह नीली गोल गेंद जैसी क्या है?''

झबरू– ''वह तो धरती है।''

''धरती? धरती तो हरी–भरी होती है। यह तो नीली है?''

भूरा– ''अरे मोहन! तुमको नहीं पता कि हमारी धरती में दो–तिहाई पानी है। पानी के कारण ही तो वह नीली दिखाई दे रही है। इसीलिए तो धरती को 'नीला ग्रह' भी कहते हैं।''

''हमारी धरती को नीला ग्रह कहते हैं! क्या तुम लोग भी धरती में रहते हो?'' मोहन ने झबरू से पूछा।

''हाँ... हमारा असली घर तो धरती में समुद्र हैं। आसमान में तो हम वर्षा करने के लिए आते हैं।'' झबरू और भूरा दोनों ने उत्तर दिया।

''आप समुद्र से आसमान में कैसे आते हो?''

साँवली ने बताया– ''जब दिन में धूप आती है तो सूरज की गर्मी से नदियों, तालाबों, झीलों और समुद्रों का पानी वाष्पित होकर भाप बनने लगता है। यह भाप हवा के साथ ऊपर उठ जाती है और फिर एकत्रित होकर हम बादल बन जाते हैं। हवा हमको आसमान में फैला देती है और हम वर्षण करते हैं। समुद्र के पानी के वाष्प में बदलने को वाष्पन कहते हैं। जलवाष्प में एकत्रित होकर बादल बनने को संघनन कहते हैं और हम बादलों से पानी बरसने को वर्षण कहते हैं।''

मोहन आश्चर्य से बोला– ''ओह! इसका अर्थ जलवाष्प, बादल, वर्षा सब एक ही हुए?''

''हाँ! बस रूप अलग–अलग हैं। पानी द्रव है

और वाष्प गैस हैं।'' भूरा ने उत्तर दिया।

''यह तो ठीक है। लेकिन बरफ और ओले कहाँ से आते हैं? समुद्र में तो बरफ नहीं होती है!'' मोहन ने जिज्ञासा प्रकट की।

झबरू बोला– ''बरफ भी पानी का ही एक रूप है। पानी तरल होता है बरफ ठोस होती है। जब पानी का ताप गिर कर शून्य डिग्री हो जाता है तो वह जमने लगता है और बरफ बन जाता है। जब ठंड के दिनों में आसमान का तापमान गिरकर शून्य डिग्री से कम हो जाता है तो वर्षा की बूँदें जमकर बरफ बनकर गिरने लगती है।''

''अच्छा! और ओले?'' मोहन ने झबरू की ओर देखा।

झबरू थक गया था। बोला, ''भूरा भैया! आप बताओ न मोहन को, ओले कैसे बनते हैं।''

भूरा बोला– ''अरे मोहन! तुमको यह तो पता ही होगा कि हमारे वायुमंडल में जलवाष्प होती है। जब वायुमंडल बहुत अधिक ठंडा हो जाता है तो यह वाष्प संघनित होकर छोटी–छोटी बूँदों के रूप में जम जाती है और गोलों का रूप धारण कर लेती है। जब ये गोले भारी हो जाते हैं तो धरती पर गिर जाते हैं। इनको ओले कहते हैं।''

मोहन कुछ सोचते हुए बोलो– ''पहले भाप, फिर बादल और फिर वर्षा। अच्छा तो वर्षा का क्या होता है?'' झबरू बोला– ''वर्षा का कुछ भाग तो धरती सोंख लेती है और बाकी भाग बहकर नदियों से होते हुए समुद्र में चला जाता है। ओ देखो उधर नदी में वर्षा का पानी बह रहा है।''

मोहन ने नीचे देखा तो नदी गंदे पानी से उफनती हुई बह रही थी। उसने पूछा– ''इसका अर्थ है वर्षा समुद्रों से आकर समुद्रों में ही चली जाती है और फिर वैसे ही चक्कर लगाती है?''

''हाँ बिलकुल! वर्षा के इस प्रकार समुद्र से भाप बनने, बादल बनने, बरसने और फिर समुद्र में जाने और फिर भाप बनने का चक्र वर्षा चक्र कहलाता है।''

मोहन ने कहा– ''वह तो ठीक है। लेकिन वर्षा से नदी का पानी तो गंदा हो गया।''

साँवली मुँह फुलाकर बोली– ''वर्षा से तो धरती की सतह की मिट्टी बह रही है। तब नदी मटमैली दिखाई दे रही है। नदियों को तुम मनुष्य गंदा करते हो। चलो मेरे साथ! मैं दिखाती हूँ।'' साँवली मोहन का हाथ पकड़कर नदियों को दिखाने लगी। ''ओऽऽ देखो! उधर, वह औरत तालाब में भैंस नहला रही है।''

मोहन ने नीचे देखा तो उसके आश्चर्य की सीमा नहीं रही। उसने कहीं पर लोगों को मरे जानवर नदियों में डालते देखा, कहीं पर घर का कूड़ा, करकट, प्लास्टिक नदियों में डालते हुए देखा। हद तो तब हो गई जब उसने देखा कि एक शहर की फैक्ट्रियों की सारी गंदगी नदी में बह रही थी और दूसरे शहर में लोग उस प्रदूषित पानी को पी रहे थे।

''देखा! मनुष्य ने कैसा नाश मार दिया नदियों और तालाबों का?'' साँवली ने मोहन को झिड़की दी।

मोहन की नजरें झुक गईं। वह कुछ नहीं बोल पाया। तभी झबरू दौड़ता हुआ आया और बोला– ''साँवली! देखो! माँ कितनी तेजी से आ रही है।'' साँवली खुश हो गई। मोहन ने देखा तो तेज हवा के साथ एक बदली उनकी ओर आ रही थी। तभी मोहन के पीछे से एक परी आई और उसने मोहन का हाथ पकड़कर कहा– ''मोहन! तुम भीग जाओगे। चलो, मैं तुमको पहुँचा देती हूँ।'' परी ने तेजी से मोहन को बिस्तर के अंदर छिपा दिया।

मोहन की आँख खुली तो उसने देखा कि साँझ हो गई है। बाहर तेज बारिश हो रही है और माता जी आरती की तैयारी कर रही है।

– बाजपुर (उत्तराखंड)

भरोसा

चित्रकथा-

लालू ने एक सेठ के यहां सप्ताह भर काम करने के पचास रुपये तय किए-

फिर चार दिन डटकर काम किया-

और सेठ से बोला -

हुजूर, अब आप मुझे सप्ताह भर के लिए तय पचास रुपये दे दें.

सेठ ने कहा-

पर तुम्हें तो अभी काम करते सिर्फ चार दिन ही हुए हैं लालू...

तो क्या? मैंने चार दिन आपका भरोसा किया, अब तीन दिन आप मेरा भरोसा कीजिए..

सहकारी बैंक में चोर

– रजनीकांत शुक्ल

गुजरात राज्य के कच्छ जिले में गाँधीधाम नाम का खूबसूरत नगर है। इस नगर की स्थापना १९५० में सिन्ध से आए हुए शरणार्थियों को बसाने के लिए की गई थी। यहाँ के लोगों ने खूब तरक्की करके इसे समृद्धि प्रदान की है इसी कारण इसे कच्छ जिले की आर्थिक राजधानी भी कहा जाता है।

यहाँ पर किसानों और अन्य लोगों को अपने व्यवसाय को चलाने उसे उत्तम बनाने के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान करने के लिए सहकारी बैंक की स्थापना की गई। इन्हीं में से एक सहकारी बैंक की शाखा के चौकीदार का नाम था सरदार सिंह सोधा...

वह वर्ष १९९९ के जून महीने की आखिरी तारीख थी। रोज की तरह ही सरदार सिंह उसी बैंक परिसर में अपने भतीजे धीरूबा के साथ बाहरी हिस्से में लेटे हुए थे। चौकीदार का परिवार बैंक की रखवाली के लिए बैंक परिसर में ही रहता था। उस दिन भी चूँकि जून का महीना होने के कारण तेज गरमी पड़ रही थी इसलिए नींद न आने के कारण से देर रात तक वे जागते रहे थे। आधी रात के बाद का लगभग दो बजे का समय था जब वे नींद में सोते से उस समय उठे जब उन्हें किसी के द्वारा जोर–जोर से जगाया गया।

जब उनकी आँख खुली तो सामने का दृश्य देखकर तो उनके होश ही उड़ गए। उनकी आँखों के सामने कई अनजाने लोग खड़े थे। उनमें से एक भी उनका परिचित नहीं था। वे कौन थे और उसे क्यों जगा रहे थे इसका पता उन्हें जल्दी ही तब लग गया जब उनमें से एक ने उनसे कड़क कर बैंक की चाबियों की माँग की। उनके हाथों में तमंचा रिवाल्वर और लोहे की छड़ें थीं। यह शोरगुल सुनकर पास में लेटा धीरूबा भी जाग गया था। एकाएक सोते से जागने पर उसे भी कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि यह सब क्या हो रहा है?

मगर जब सरदार सिंह ने कहा कि मेरे पास चाबियाँ नहीं है तो वे लोग आगबबूला हो गए। पहले तो उन्हें भरोसा नहीं हुआ कि सरदार सिंह ने सच बोला है। वे बोले– एक चाबी तो इमरजेन्सी के लिए तेरे पास रहती ही होगी। जब खूब धमकाने मारने–पीटने के बाद भी सरदार सिंह एक ही रट लगाए रहे कि वास्तव में चाबी मेरे पास नहीं है तो वे समझ गए कि यह सच बोल रहा है।

अब बदमाशों ने मिलकर सरदार सिंह के हाथ रस्सी से कसकर बाँध दिए और फिर उन दोनों को पास ही बने एक शौचालय में डालकर बाहर से उसका दरवाजा बंद कर दिया और उन्हें यह चेतावनी दी कि खबरदार अगर यहाँ से किसी ने भागने का प्रयास किया। अब वे सारे उसी बैंक की इमारत के पिछले भाग की ओर जाकर लोहे की छड़ से लोहे की खिड़की वाली ग्रिल तोड़ने में लग गए।

इधर सरदार सिंह लगातार छूटने की कोशिश करने लगे किन्तु उनके हाथ इतनी मजबूती से बँधे थे कि वे चाहकर भी कुछ नहीं कर पा रहे थे। जब उन्हें यह लगा कि वे बदमाश उसके पास से अधिक दूर जा चुके हैं। तो उन्होंने सहायता के लिए चिल्लाना शुरु कर दिया। उनके चिल्लाने की आवाज रात के सन्नाटे में ग्रिल काटते बदमाशों के कानों तक जा पहुँची।

वे सब गुस्से में आ गए एक तो उन्हें सरदार सिंह से चाबी नहीं मिल पाई थी दूसरे ग्रिल काटने में उन्हें परेशानी हो रही थी। इसी बीच फिर से सरदार सिंह के चिल्लाने की आवाज उनके कानों में सीसे की तरह चुभी तो उनके प्रमुख व्यक्ति ने अपने साथियों से कहा–अरे! पहले इसे चुप कराओ जाकर..।

उसके उन साथी बदमाशों को भी बहुत गुस्सा आ रहा था। उनमें से दो तेजी से भागते हुए शौचालय

तक पहुँचे और जोर से शौचालय का दरवाजा खोला। दरवाजा खुलने की आहट सुनकर सरदारसिंह ने सोचा कि शायद उनकी मदद की आवाजें सुनकर कोई उन्हें बचाने के लिए आया है। किन्तु दरवाजा खुलते ही उनके होश उड़ गए। जब यमदूतों की तरह खड़े दो बदमाश उन्हें दिखाई दिए।

लाल-लाल आँखें किए गुस्से से नाराज उन्होंने पहले तो सरदारसिंह को देखा और धमकाते हुए कहा- ''मना किया था कि कोई हरकत मत करना। लेकिन तेरी समझ में नहीं आई। सीधी तरह से बात समझाने पर समझ नहीं आती है तो ले अब समझ।'' ये कहते हुए उनमें से एक ने उन पर गोली चला दी। जिससे बचने के लिए सरदार सिंह दूसरी ओर लुढ़क गए। अब उनकी किस्मत कहो या अँधेरे की महिमा बदमाश की चलाई उस गोली का निशाना चूक गया। अब उन्होंने सरदार सिंह के सिर और कोहनी पर हाथ में पकड़ी उसी लोहे की छड़ से वार कर दिए जिससे वे खिड़की की ग्रिल तोड़ने की कोशिश कर रहे थे। उस लोहे की छड़ के गम्भीर प्रहार से सरदार सिंह की दर्द भरी चीखें निकल गईं। चोट लगने के कारण अब-अब वे जान की चिन्ता छोड़कर उनसे बचने के लिए भिड़ गए।

उधर उनकी इतनी जोर की चीखें सुनकर पास के कमरे में सोई हुई उनकी लगभग बारह साल की बेटी चन्दूबा की आँख खुल गई। अपने पिता की दर्द भरी आवाज सुनकर वह जल्दी से बिस्तर छोड़कर उठी और तेजी से बाहर की ओर दौड़ी। बाहर आकर उसने जब अपने पिता और भाई को बदमाशों से भिड़े हुए देखा तो वह सब समझ गई। वह तेजी से बाहर के गेट की ओर दौड़ी और सहायता के लिए जोर-जोर से चिल्लाने लगी।

अचानक घटनाक्रम में आए इस परिवर्तन को देख सुनकर बदमाश घबरा गए। वे समझ गए कि अब मामला बिगड़ गया है। ऐसे में भागना ही उनके लिए बेहतर है। उन्होंने तेजी से सरदार सिंह व धीरूबा को शौचालय में पीछे की ओर धक्का दिया और तेजी से उस शौचालय का दरवाजा बन्द कर दिया। अब वे तीर की तरह उस जगह को छोड़कर अपने बाकी साथियों को भी भागने के लिए कहते हुए सीधे सिर पर पैर रखकर भाग लिए। वे समझ चुके थे कि अगर कुछ देर वहाँ और ठहर गए तो वे पकड़े जाएँगे फिर उनका जो हाल होगा उसकी कल्पना करते हुए उस समय उनके पैरों में पंख लग चुके थे।

बदमाशों को वहाँ से बाहर भागते देखकर चन्दूबा तुरन्त पलटकर वापस लौट पड़ी। उसकी निगाहों में अपने पिता और भाई की घायल तस्वीर कौंध रही थी। वह तेजी से दौड़ती हुई शौचालय के पास आई और झट से उसका दरवाजा खोल दिया। चन्दूबा यह देखकर चीख पड़ी जब उसने देखा कि उसके पिता के सिर से ढेर सारा खून बह रहा था।

उसने तुरन्त आगे बढ़कर उन्हें अपने नन्हें हाथों का सहारा देकर पकड़ लिया और अपने पिता के हाथ खोलने लगी। उधर चन्दूबा के चीखने की तेज आवाजें सुनकर अनेक लोग वहाँ जमा होने लगे थे। जिन्होंने दौड़ते हुए पास आकर सरदार सिंह को सहारा दिया और फिर जल्दी ही उन्हें अस्पताल ले जाया गया।

उधर उन बदमाशों के दो साथियों को बैंक से कुछ आगे जाते ही पुलिस ने धर दबोचा। उनके अन्य साथी भी जो उस समय दूसरी दिशा में भाग गए थे कुछ समय बाद तब पकड़ लिए गए जब पुलिस ने उन पकड़े गए बदमाशों से अपने ढंग से पूछताछ की। सभी लोग नन्हीं चन्दूबा की बहादुरी की प्रशंसा कर रहे थे। अगर चन्दूबा समझदारी दिखाते हुए गेट के बाहर जाकर सहायता के लिए न चिल्लाती तो वे बदमाश सरदार सिंह और धीरूबा की जान भी ले सकते थे।

चन्दूबा ने अपनी हिम्मत और समझदारी से उन बदमाशों को वहाँ से भागने के लिए मजबूर कर दिया था और मदद के लिए लगाई आवाजों ने उन बदमाशों को पकड़ने में सहायता की। लोगों ने उसकी बहादुरी की घटना का ब्यौरा जब उचित माध्यम से भेजा तो चन्दूबा सोधा को वर्ष २००० का राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार देश के प्रधानमंत्री जी द्वारा देश की राजधानी नई दिल्ली में प्रदान किया गया।

नन्हें मित्रो–

पड़े जरूरत जब भी अपना काम करो तुम मन से,
पता नहीं कब कौन बात बदले इस परिवर्तन से।
खड़े–खड़े चुपचाप देखते रहना नहीं उचित है,
बहते जल की तरह बनो उपयोगी इस जीवन से।

– नई दिल्ली

देवपुत्र का इंद्रधनुषी मार्च अंक अति सुंदर लगा। इसकी कहानियाँ, आलेख, प्रेरक प्रसंग, कविताएँ, चित्रकथाएँ आदि सभी रचनाओं ने पूरे परिवार का मन मोह लिया। गागर में सागर कहावत को चरितार्थ करने वाले सम्पादकीय परिवार व सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई, शुभकामनाएँ।

– चाँद मो. घोसी, मेड़ता सिटी (राज.)

देवपुत्र (मई २०२२) प्राप्त हुई। बच्चों की गर्मियों की छुट्टियाँ शुरू हो चुकी है ऐसे समय पर घर के भीतर देवपुत्र का प्रवेश होते ही क्या स्थितियाँ होती होंगी बताने की आवश्यकता नहीं है। सच में, सचित्र प्रेरक बाल मासिक देवपुत्र सुन्दरतम उपहार है। आभार! छुट्टी गर्मी की, बताता आवरण चित्र का तो कहना ही क्या! हाँ, मुझे लगा कि जहाँ तरबूज, आम, आइसक्रीम खाते और खेलते–कूदते बाल गोपाल के चित्र हैं वहाँ देवपुत्र का आनंद लेते एक दो बच्चे तो गर्मियों की छुट्टी में प्रतीक रूप में होने ही चाहिए। इस पत्र को अधिक लंबा न करते हुए मई २०२२ अंक के बारे में इतना अवश्य कहना होगा कि जिस बाल पत्रिका ने 'सीता की बाल लीला' से लेकर 'सेल्फी का चक्कर' तक के समकालीन बाल साहित्य को संजो रखा हो वह सच्चे अर्थों में परम्परा और आधुनिकता से युक्त युगानुकूल भारत के भविष्य को दिशा देने में सार्थक और सफल प्रयास है।

– डॉ. वेद मित्र शुक्ल, नई दिल्ली

अंक चित्र बनाना सीखिए

शाला में सर्व प्रथम अंक गणित के अध्यापक जी आपको 1 से लेकर सौ तक की गिनती सिखवाते हैं. उन अंकों से चित्र कैसे बनते हैं? यह वह नहीं बताते. चित्रकार साथियों, आप रब्बड़, पेन्सिल, स्केल, ड्राईंग शीटस्, तख्ती आदि लेकर तैयार हो जाइए और निम्न विधि द्वारा 1 से 5 तक के अंकों की मदद से हवाई जहाज, दीवार घड़ी, तितली, पतंग, चिमनी बनाना सीखिए.

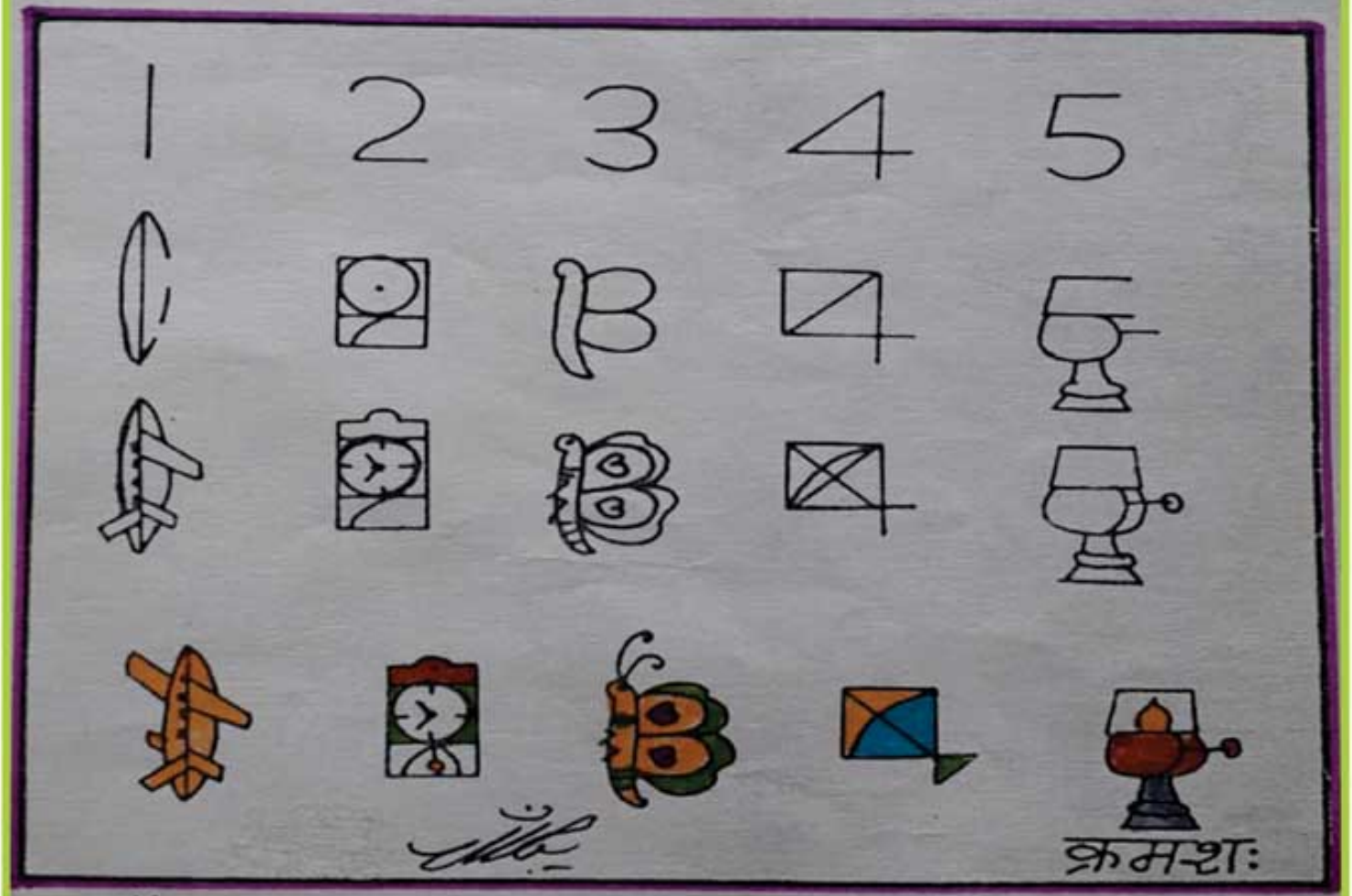

चाँद मोहम्मद घोसी
नन्हा बाजार, मेड़ता सिटी-341510 (राज.)

चुन्नी-मुन्नी की साहसिक यात्रा

– डॉ. शील कौशिक

चुन्नी-मुन्नी मुर्गी के दो चूजे थे। चुन्नी एकदम सफेद गोरे रंग की, तो मुन्नी भूरे रंग की थी। चुन्नी, मुन्नी से आयु में बड़ी थी। दोनों हद से ज्यादा नटखट थीं। आए दिन दोनों कोई न कोई ऐसा नटखटपन कर बैठती थीं, जिससे उन्हें अपनी माँ मुर्गी सोनी की डाँट का सामना करना पड़ता था।

उस दिन की ही तो बात है। पड़ोस वाली काकी उनकी घर की मालकिन से लड़ने आ गई। ''जब अपने मुर्गी-मुर्गियों और चूजों को संभाल कर नहीं रख सकते, तो इन्हें क्यों पाल रखा है? इन्हें दड़बे में बंद रखा करो। ये दोनों हमारे दरवाजे को खुला पाकर अंदर घुस आईं। धूप में सुखाने के लिए फैलाए गेहूँ के दाने चुगने लगीं और अपने गंदे पैरों से हमारे गेहूँ भी गंदे कर दिए। अब मुझे दोबारा धोने पड़ेंगे।'' मालकिन ने किसी तरह उसे शांत कर, गुस्से में उन सबको दड़बे में बंद कर दिया।

मुन्नी ने अपने पैरों की ओर झाँका और चुन्नी को कहा- ''मेरे पैर तो साफ हैं दीदी! फिर काकी गुस्सा क्यों कर हैं।''

''मुन्नी! इनकी तो आदत है, हमें कुछ न कुछ कहने की। हमेशा किसी न किसी बात पर शिकायत करती रहती है।''

उनकी माँ चुन्नी और मुन्नी को डाँटने लगी, ''देखा फिर तुमने शिकायत वाला काम कर दिया। तुम्हारी दिन-प्रतिदिन की शिकायतों से मैं तंग आ चुकी हूँ। खबरदार! जो अब घर से बाहर निकले।''

चुन्नी-मुन्नी की एक आदत थी कि वे दोनों परस्पर चाहे लाख लड़-झगड़ लें, लेकिन किसी दूसरे के एक को डाँटने पर दूसरी उसका पूरा समर्थन करती थी। उस दिन भी दोनों एक-दूसरे का हाथ पकड़े चुपचाप खड़ी रहीं।

जुलाई का महीना जाने वाला था, फिर भी आज बहुत तेज की बारिश होने लगी। इतनी तेज बारिश चुन्नी, मुन्नी ने कभी नहीं देखी थी। उस दिन पूरा समय वे दड़बे के अंदर ही बैठी रहीं। उनके पैरों को तो बाहर निकलने की आदत थी। वे दोनों खूब ऊब गईं। उनका पूरा दिन उदासी में ही बीता। अगले दिन सवेरे उठते ही चुन्नी ने जैसे ही अंगड़ाई ली, उसका मन बाहर जाने के लिए मचलने लगा। चुन्नी बाहरी दरवाजे के पास आई। मौसम बहुत सुहावना था। आसपास के सभी पेड़-पौधे नहाए-धोए खूब हरे-हरे दिखाई पड़ रहे थे। आसमान में अभी भी कुछ बादल थे। उसने चुपचाप बिस्तर पर गहरी नींद में सोई हुई मुन्नी को जगाया। उनसे रहा न गया और वे चुपचाप मुख्य दरवाजे से दबे कदमों से बाहर निकल आईं। दोनों ने सावधानी से सड़क पार की। चलते-

चलते कब वे बहुत दूर अपनी कॉलोनी से बाहर निकल आईं, उन्हें पता ही नहीं चला।

कल रात की भारी बारिश के कारण पूरी कॉलोनी में पानी भर गया था। इस पानी को मशीन से निकाल कर नाले में छोड़ा जा रहा था। तेज बहते पानी को देख कर उन्हें बहुत आनंद आने लगा। वे दोनों उस बड़े नाले के किनारे-किनारे चल रही थीं, कि तभी मुन्नी का पैर फिसला और वह पानी में गिर गई। मुन्नी का हाथ चुन्नी ने पकड़ा हुआ था इसलिए वह भी पानी में गिर गई। अब तो उनके होश उड़ गए। वे जोर-जोर से चिल्लाने लगीं, ''माँ! माँ! बचाओ।'' आसपास कोई भी नहीं था। चुन्नी को माँ की सुनाई कहानी की सीख याद आ गई कि मुसीबत के समय हिम्मत और होश से काम लेना चाहिए।

चुन्नी ने मुन्नी का हाथ कसकर पकड़ा था। वह तैरने का प्रयास करने लगी। तभी चुन्नी के पास आकर कोई चीज टकराई। ये एक जोड़ी चप्पलें थीं।

चुन्नी ने एक को कसकर पकड़ लिया और मुन्नी को दूसरी पकड़ने के लिए कहा। दोनों धीरे-धीरे ऊपर की ओर उठती हुई चप्पलों के ऊपर चढ़ गईं। अब उनकी जान में जान आई। पर वे अभी भी सहमी हुई थीं क्योंकि न जाने आगे क्या मुसीबत आने वाली है।

एक-दूसरे का हाथ मजबूती से पकड़ कर वे इधर-उधर चारों तरफ झाँक रही थी। मन ही मन घबरा भी रही थी। चुन्नी ने कहा- ''मुन्नी डर मत, अब हम सुरक्षित हैं।'' ऊपर उड़ते हुए गुटर-गूँ कबूतर ने चुन्नी-मुन्नी को इस तरह देखा तो आश्चर्य से मुँह खुला रह गया, ''ये दोनों यहाँ क्या कर रही हैं?'' यह कबूतर चुन्नी, मुन्नी की मालकिन के घर में एसी के बक्से के ऊपर रहता था।

''कुछ नहीं कबूतर काका! हम दोनों तो मजे ले रहे हैं।''

''अरे! तुम्हारी जान खतरे में है, तुम पानी में डूब कर मर जाओगे। मैं अभी तुम्हारी माँ का सूचना देता हूँ।'' चुन्नी ने मुन्नी की ओर देखकर कहा- ''कितना मजा आ रहा है न मुन्नी?''

''हाँ दीदी! मुझे बहुत अच्छा लग रहा है।'' वे दोनों खुशी से पुलक उठीं। ऊपर खुले आसमान में उड़ते हुए पक्षियों को देख वे प्रसन्न हो रहीं थी।

कुछ दूर जाने पर चुन्नी को पानी में रस्सी जैसा कुछ दिखाई पड़ा। चुन्नी ने सोचा, इसे मैं पकड़ लेती हूँ, यह अवश्य ही हमारे काम आएगी। ज्यूँ ही उसने रस्सी को कसकर पकड़ा उसे वह गिलगिला और हाथ में रेंगता हुआ लगा।

''अरे बाप रे! यह तो साँप है।'' चुन्नी ने साँप के बारे में पढ़ रखा था। उसने तुरंत हाथ ढीला किया और सांप छटपटा कर पानी में तेजी से पार निकल गया। कुछ देर बाद मुन्नी चिल्लाई, ''दीदी! देखो, कितने सारे तिलचट्टे! क्यों ना इन्हें भी अपनी चप्पल वाली नाव पर बैठा लेते हैं।''

''लगता है ये भी घरों में से पानी के बहाव के

साथ यहाँ तक पहुँचे हैं। यह देख और भी कितने कीड़े-मकोड़े, मेंढक पानी में हैं। हम इन सबको कैसे बैठा सकते हैं?''

नाले के साथ चलते-चलते अब वे ऐसी जगह पहुँच गए थे, जहाँ चारों ओर हरियाली थी। किनारे पर घर बने हुए थे। ''लगता है हम किसी बस्ती से गुजर रहे हैं। यह देखो, उस विशाल वृक्ष के नीचे दुकान बनी है। परन्तु यह तो पानी में डूबी हुई है और बंद भी है।''

''मुझे तो जोरों की भूख लग आई है। काश! हम दुकान में घुसकर कुछ खा पाते।'' कुछ देर बाद पानी का बहाव भी धीमा हो गया। अब पानी चारों ओर फैल गया था उनकी चप्पलें समतल जमीन पर आकर ठहर गई थीं। वे दोनों कूदकर धरती पर आ गईं।

''दीदी! आज तो चप्पलों पर सैर करने में बड़ा मजा आया। पर अब हम घर कैसे पहुँचेंगे?''

''लगता है हम बहुत दूर निकल आए हैं। कोई बात नहीं मुन्नी, मैं हूँ न! हम इस बार नाले के साथ-साथ सावधानी से चलकर घर पहुँच जाएँगे।''

उधर कबूतर ने घर जाकर चुन्नी, मुन्नी की माँ मुर्गी को सब कुछ बता दिया। वह घबराई हुई दौड़ी और नाले के साथ-साथ वहाँ पहुँची, जहाँ नाला समाप्त होता है। चुन्नी, मुन्नी माँ को देखकर खुशी से चिल्लाने लगीं, ''माँ... माँ!''

उन दोनों को सुरक्षित पाकर माँ सोनी की जान में जान आई। अब वह उन दोनों को डाँटना भूल गई थी। उसने अपनी साहसी बच्चियों को गले लगा लिया।

- सिरसा (हरियाणा)

लघुकथा

इशारा

- राम मूरत राही

पन्द्रह वर्षीय मणि को उसकी माँ ने एक मिठाई का पैकेट देते हुए कहा- ''बेटा! इसे हनुमान जी के मंदिर में ले जाकर चढ़ा देना।''

''जी माँ! मणि ने कहा और फिर मिठाई का पैकेट लेकर जब वह घर से बाहर निकलने लगा, तभी तीन छोटे-छोटे गरीब बच्चे दरवाजे पर आए और उनमें से एक बच्चे ने अपने पेट पर हाथ फेरते हुए कहा- ''भैया! हम लोगों को जोरों की भूख लग रही है। कुछ खाने को दो न!''

बच्चों को भूखा देख मणि को उन बच्चों पर दया आ गई। तब उसने मिठाई का पैकेट उन बच्चों को पकड़ा दिया। वे भूखे बच्चे मिठाई का पैकेट खोलकर वहीं खाने लगे। जब वापस मणि घर में खाली हाथ गया, तो उसकी माँ ने पूछा- ''तू वापस क्यों आ गया, मिठाई का पैकेट कहाँ है?'' ''माँ! मैंने वो मिठाई का पैकेट बाहर भूखे बच्चों को दे दिया।''

यह सुनकर उसकी माँ ने गुस्से में डाँटते हुए कहा- ''तुझमें इतनी भी बुद्धि नहीं है कि मैंने तुझे मिठाई का पैकेट भगवान को चढ़ाने के लिए दिया था, और तू उन बच्चों को दे आया।''

मणि ने माँ को दीवार पर लगी स्वामी विवेकानंद की तस्वीर के नीचे लिखे विचार की ओर संकेत किया। उधर देख, उसकी माँ ने फिर उसे कुछ नहीं कहा। क्योंकि वहाँ लिखा था, **मैं उस प्रभु का सेवक हूँ, जिसे अज्ञानी लोग 'मनुष्य' कहते हैं।**

- इन्दौर (म. प्र.)

बाल श्रम

चित्रकथा : देवांशु वत्स

गलतियाँ हमारी गुरु

– शैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी

फिरोजाबाद जनपद में स्वर्गीय बनारसी दास एवं सुबोध चंद चतुर्वेदी अखिल भारतीय २०–२० लीग क्रिकेट मैच प्रतियोगिताएँ राजा का ताल स्टेडियम में चल रही थी।

वहीं पैवेलियन के एक छोर पर एकांत में कुर्सी पर बैठा सुलभ कुछ उदास था। यह देख रंजन का माथा ठनका। उसने सुलभ से पूछा क्या हुआ? ''तू इतना उदास क्यों है? मुझे तो खुश होना चाहिए अपनी क्रिकेट टीम की घोषित खिलाड़ियों की सूची में तुझे भी तो बल्लबाज के रूप में चुना गया है। और इस बार क्रिकेट मैंच हमारी टीम ही जीतेगी।'' रंजन ने उत्साह से कहा।

सुलभ चुप रहा। ''इस बार मैं नहीं खेल सकूँगा।'' थोड़ी देर बाद उसने कहा।

''क्यों... क्यों?'' रंजन ने हैरानी से पूछा।

''मुझे टीम में बारहवें खिलाड़ी के रूप में शामिल किया गया है।'' सुलभ ने कहा।

रंजन भी उदास हो गया।

''पर अगर टीम का को कोई बल्लेबाज बीमार या घायल हो जाए तब तो तू खेल सकेगा ना?'' रंजन ने कुछ देर सोचकर पूछा।

''हाँ, बारहवाँ खिलाड़ी इसीलिए होता है।'' सुलभ ने कहा।

''तो एक काम करते हैं। मैं अपनी टीम के बेस्ट बेस्टमैन दीपेश को कोई ना कोई तरकीब लगा घायल कर चोटिल कर दूँ तब तो तू खेल सकेगा?'' रंजन ने कहा।

घर आकर सुलभ के दिमाग में रंजन की कहीं हुई बातें घूमती रही। उसने तय किया कि यदि दीपेश घायल हो जाए तो वह टीम में खेल सकेगा। सोमवार का दिन था उसने अपने पिताजी के टूल बॉक्स से औजार निकाले और दीपेश के घर की ओर चल दिया। सुलभ ने अवसर पाकर उसकी साईकिल के ब्रेक के तार ढीले कर दिए। सुबह सुलभ ओम स्टेडियम पहुँचकर रंजन की प्रतीक्षा करने लगे। तभी उसकी नजर दीपेश पर पड़ी। उसके पिताजी उसे छोड़ने आए थे। उसे ठीक ठाक देखकर सुलभ का उत्साह ठंडा पड़ गया। लेकिन रंजन आखिर तक क्रिकेट मैदान पर नहीं पहुँच सका। सुलभ की टीम ने अच्छा खेल का प्रदर्शन करते हुए क्रिकेट मैच को जीत लिया। पर स्वयं को बैटिंग करने का अवसर नहीं मिल सका। मैच समाप्त होने के बाद रंजन सीधा सुलभ के घर गया।

''नमस्ते ताई! रंजन कहाँ है? आज वह क्रिकेट मैंच खेलने नहीं पहुँचा।'' उसने रंजन की माँ से कहा।

''आओ बेटे! उसे तो कल चोट लग गई। पैर की हड्डी टूट गई है।''

रंजन अपने कमरे में बिस्तर पर लेटा था।

''अरे रंजन! कैसा है तू? और तुझे यह चोट कैसे लगी?'' सुलभ ने पूछा।

बस भाई। कल बाजार जा रहा था। मेरी साईकिल पंचर हो गई थी इसलिए मैंने दीपेश से साईकिल माँग ली। जब मैं ढलान पर पहुँचा तो ब्रेक ही नहीं लगे। साईकिल तेजी से सड़क के किनारे लगे डिवाईडर से जा टकराई और मैं गिरकर बेहोश हो गया।''

दीपेश की साईकिल। सुलभ का दिल बैठ गया। इसका मतलब मेरे कारण से रंजन को चोट लगी। उसे बहुत दु:ख हुआ क्योंकि उसका सबसे अच्छा मित्र था वह।

''रंजन! कृपया मुझे क्षमा कर दो।'' सुलभ ने भर्राए स्वर में कहा।

''किन्तु किसलिए?'' रंजन ने हैरानी से पूछा।

''मैंने ही दीपेश की साईकिल के ब्रेक ढीले कर दिए थे, ताकि उसे चोट लग जाए और मैं उसके स्थान पर टीम में खेल सकूँ।'' सुलभ ने कहा।

रंजन कुछ देर चुप रहकर बोला, ''फिर तो मुझे भी अपने किए का दण्ड मिल गया। मैंने ही तो तुझे किसी को घायल करने की सलाह दी थी।''

तभी अचानक रंजन की माँ ने वहाँ आते-आते उन दोनों की बात सुनी। उन्होंने बताया कि गलतियाँ हमारी सबसे बड़ी गुरु होती हैं। इनसे जो सबक हमें मिलते हैं वे जीवन भर हमें सचेत करते रहते हैं।

– ९४ चौबान मुहल्ला, फिरोजाबाद (उ. प्र.)

वेदव्यास जयंती-गुरुपौर्णिमा, आषाढ़ी पूर्णिमा

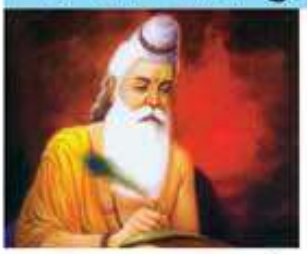

व्यास वचन

अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्
परोपकराय पुण्याय पापाय परपीडनम्

(अठारह पुराणों में व्यास जी ने दो ही बात मुख्य रूप से बतायी है कि दूसरों का भला करना ही पुण्य और दूसरों को सताना ही पाप है।)

केचिद् वदन्ति धनहीन जनो जघन्य:
केचिद् वदन्ति गुणाहीन जनो जघन्य:।
व्यासोवदत्यऽखिल वेद-विशेषविज्ञ:
नारायणस्मरणहीन जनो जघन्य:।।

(कोई कहते हैं गरीब व्यक्ति पापी है कोई कहते हैं गुणहीन लोग हीन हैं लेकिन मैं समस्त वेदों का विशेषज्ञ व्यास कहता हूँ कि अधम तो वे ही हैं जो भगवान का स्मरण नहीं करते।)

पुस्तक परिचय

तीन पौराणिक नाटक
मूल्य १२५/-

श्री महावीर रवांल्टा बाल साहित्य के विशेष रचनाधर्मी हस्ताक्षर हैं। आपके लिए प्रस्तुत है उनकी एक महत्वपूर्ण पुस्तक। अहिल्या उद्धार, वीर अभिमन्यु एवं सत्यवादी हरिश्चन्द्र की पौराणिक कथा तो प्राय: आप सबने सुनी होगी। इन कथाओं को मंचन योग्य रोचक नाटकों के रूप में प्रस्तुत किया है रवांल्टा जी ने।
प्रकाशक- समय साक्ष्य १५, फालतू लाइन, देहरादून-२४८००१ (उत्तराखण्ड)

डॉ. विकास दवे साहित्य जगत का सुप्रतिष्ठित नाम है। देवपुत्र के संपादन में आपका योगदान अविस्मरणीय है। गत दिनों विद्याभारती संस्कृति शिक्षा संस्थान संस्कृति भवन, सालारपुर रोड, कुरुक्षेत्र हरियाणा से आपकी दो पुस्तकें आप बच्चों के लिए प्रकाशित हुई।

कड़वा मुँह मीठी बातें
मूल्य ७५/-

इस पुस्तक में आपको मनोरंजन लुभावनी भाषा शैली में शिक्षा एवं संस्कारों से युक्त ६ बाल कहानियाँ हैं। सुन्दर चित्रों ने इन्हें और भी आकर्षण प्रदान किया है।

देश के लिए जीना सीखें
मूल्य ३५/-

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्री गुरुजी के जीवन प्रसंगों पर केन्द्रित इस नाटक में देशभक्ति का अनूठा रंग और प्रेरणा प्राप्त होगी।

पुछल्लू और मटुरिया की होली
मूल्य १००/-

विख्यात बाल कथाकार डॉ. मंजरी जोशी की इस पुस्तक में विभिन्न पर्वों त्यौहारों पर १८ मनभावन बाल कहानियाँ हैं। पर्वों का आनंद और उनकी जानकारी बढ़ाती कहानियाँ।
प्रकाशक-देवभूमि विचार प्रकाशन बी ब्लॉक, मंदाकिनी विहार सहस्त्रधारा रोड, देहरादून (उत्तर प्रदेश)

काव्य गंगा
मूल्य १९९/-

प्रवीण लेखिका व कुशल शिक्षिका डॉ. रेखा मण्डलोई 'गंगा' की ६७ सुन्दर कविताओं का रोचक संकलन।
प्रकाशन सहयोग- म. प्र. साहित्य अकादमी भोपाल (म. प्र.)

जीवन सागर के मोती
मूल्य ७२/-

ख्यात चिंतक विचारक श्रीकृष्ण चन्द्र टवाणी द्वारा जीवनोपयोगी नैतिक सूत्रों, कहानियों, प्रसंगों का बहुमूल्य संकलन।
प्रकाशक- ज्ञानमंदिर मदनगंज किशनगढ़ (राज.)

लघुकथा

जारी है सीखना

– मनोहर चमोली 'मनु'

तब आदमी जंगल में रहता था। वह शरीर को पेड़ों की छाल और सूखे पत्तों से ढ़कता था। पेड़ का तना, चट्टान और गुफाएँ ही उसका सहारा थे। जंगली फल और कच्चा माँस उसका भोजन था।

एक दिन की बात है। बर्फ गिरने लगी। आदमी ठिठुरने लगा। वह एक पेड़ के नीचे जाकर बैठ गया। चींटियाँ कहीं जा रही थीं। आदमी ने पूछा– ''कहाँ घूम रही हो?'' उसे उत्तर मिला, ''घूम नहीं रही हैं। घर जा रही हैं।'' आदमी ने पूछा, ''घर! यह क्या होता है?'' एक चींटी ने उत्तर दिया, ''बताने लगूँगी तो अपनों से बिछड़ जाऊँगी। मेरा दल आगे निकल जाएगा।'' आदमी सोचता ही रह गया। उसे समझ ही नहीं आया कि घर क्या होता है। दल क्या होता है। सैकड़ों चींटियाँ कतार में उसके सामने से निकल गईं। रात होने पर आदमी किसी गुफा या चट्टान के नीचे चला जाता। इस तरह जाड़ा बीत गया।

गरमी आई। आदमी पेड़ की छाँव में बैठा था। चींटियाँ जा रही थीं। आदमी ने पूछा– ''कहाँ चलीं? घूमने?'' उत्तर मिला, ''घूम नहीं रही हैं। भोजन जमा कर रही हैं। बरसात आने वाली है। अपने और अपनों के लिए करना पड़ता है।'' आदमी हैरान था। कहने लगा, ''अपनों के लिए! भोजन! जमा! मतलब?'' उत्तर मिला, ''इतना समय नहीं है। घर, परिवार, बच्चे भी देखने हैं।'' आदमी सोच में पड़ गया। वह चींटियों को देखता रहा। इस तरह गरमी भी बीत गई।

बरसात आई। आदमी ओढ़ना, ढकना और सहेजना कहाँ जानता था। भोजन जुटाने के लिए उसे खूब मेहनत करनी पड़ी। उसे चींटियाँ कहीं नहीं दिखाई दी। बरसात में आदमी बहुत परेशान रहा। जैसे–तैसे बरसात बीती। फिर, एक दिन उसे चींटियाँ

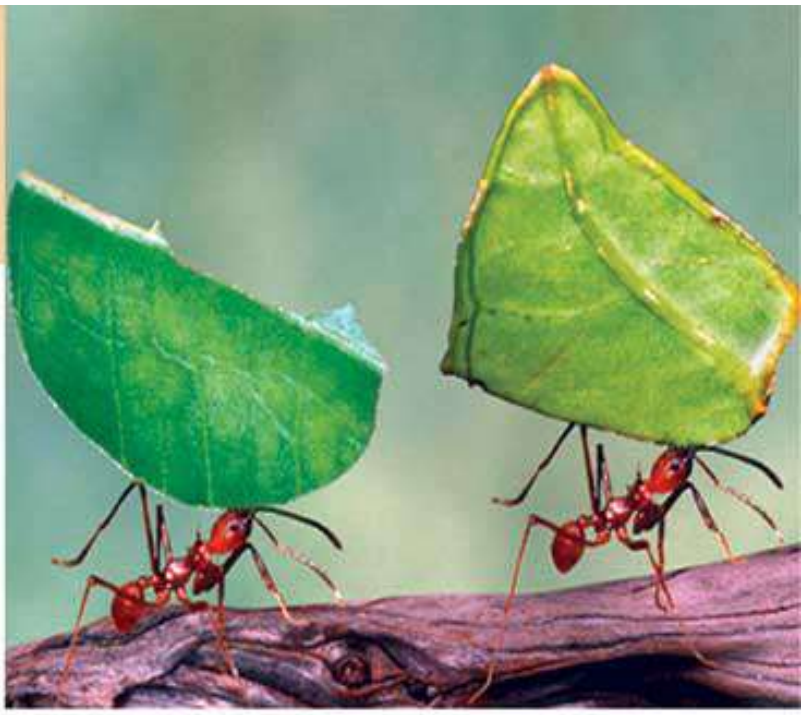

मिलीं। वह बोला– ''वह घर, वह भोजन जमा करना, वह अपनापन और वे बच्चे...! बताओ न?''

एक चींटी ने बताया, ''इस धरती पर हमारे पुरखे करोड़ों वर्ष से रह रहे हैं। पुरानी पीढ़ी अपने अनुभव नई पीढ़ी को देकर जाती है। तुम तो अभी आए हो।'' आदमी हैरान था। पुरखे, करोड़ों वर्ष, पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी। वह यह सब भी कहाँ जानता था। अब तक वह आवारा घूमता था। भोजन करता और सुस्ताने लगता। फिर सो जाता। यही उसका जीवन था। चींटियाँ अपनी राह चल पड़ीं।

अब आदमी ने सोचना शुरू कर दिया। वह विचार करने लगा। ध्यान से जल, जंगल, पहाड़, नदी को देखने लगा। धीरे–धीरे वह जानने लगा कि मौसम बदलता है। अब वह जीवों के जीवन को निकट से देखने लगा। उसने चींटियों के साथ रहना शुरू कर दिया। चींटियों से उसने बहुत कुछ सीखा। मिल–जुलकर रहना, घर बनाना, परिवार में रहना, भोजन जमा करना और अपनापन सीखा। अब उसने आग जलाना और खेती करना सीखा। तभी से आदमी का सीखना और समझना जारी है। वह आज भी नई–नई चीजें सीख रहा है। आदमी आज भी चींटियों के आस–पास ही रहता है।

– पौड़ी गढ़वाल (उत्तराखण्ड)

दादू यह मेरा कर्त्तव्य था

– बलविन्दर सिंह 'बालम'

कनाडा के खूबसूरत शहर ऐडमिंटन के टामारोक मोहल्ले के ३० एवेन्यू के पास लगभग २ मिनट के रास्ते पर एक गोलाकार पार्क है। पार्क के बाहरी छोर के साथ–साथ गोलाकार सड़क। सड़क के साथ बाहर की ओर छोटे–छोटे सुंदर पेड़ और फूलों की लुभावनी क्यारियाँ। पार्क के मैदान में हरी भरी गद्दीदार घास। साफ–सफाई खूबसूरती की गवाही देती। वहाँ का हर नागरिक स्वच्छता का कद्रदान। मोहब्बत, अनुशासन, स्वभाव, देश प्रेम ये सब कुछ बच्चों को वहाँ के विद्यालय में सिखाया जाता है।

पार्क में हर वर्ग, धर्म के लोग सैर करने आते हैं, बच्चे, जवान, अधेड़, बुजुर्ग सब। गर्मी की छुट्टियों में बच्चे, दादू–दादियाँ, नानू–नानियाँ वगैरह इस पार्क की शोभा बढ़ाते हैं। वहाँ रह रहे अलग–अलग देशों के लोग बच्चों के साथ पार्क में सैर करने आते हैं। बुजुर्ग लोग छोटे बच्चों को बग्घियों में डाल कर साफ हवा व मौसम का आनन्द लेते हैं। ये लोग अपने नौकरीपेशा बच्चों को सुख–सुविधा देने के लिए इधर आते हैं और स्वयं भी सुविधाओं का आनंद उठाते हैं।

पार्क की बायीं ओर मैदान के साथ हिंडोले, झूले, खेल, मनोरंजन के साधन हैं। यहाँ बच्चे हंसीठिठोली कर खुशी अनुभव करते हैं। साइकिल चलाना यहाँ बच्चों को मनपसंद खेल है।

मैं अपनी पोती हरप्रीत, पोता करन तथा छोटे पोते सुकरात के साथ इस पार्क में सैर करता था। ये तीनों बच्चे अपनी छोटी–छोटी साइकिलों पर पार्क में मेरे साथ सैर करते थे, क्योंकि इनका ध्यान मुझे रखना पड़ता था। मैं इनके साथ–साथ इनकी छोटी–छोटी नासमझ व कुछ समझ वाली बातों में मस्त हरीभरी धरती पर सैर करता चलता, साथ–साथ हम और गपशप भी लगाते चलते जाते।

अचानक मेरे पोते करन, जो ७ वर्ष का था ने अपनी साईकिल एकदम नीचे गिरा दी और मैदान के बीचों–बीच से दौड़ता हुआ पार चला गया। मैंने उसे बहुत आवाज दी, ''तू कहाँ जा रहा है, साईकिल फेंक कर? कहीं गिर मत जाना।'' परंतु वह दौड़े जा रहा था। मैं दूर खड़ा सब देख रहा था। वह मैदान के पार गया और कुछ समय बाद वापस आ गया।

(शेष पृष्ठ ३७ पर)

कैप्टन ऐरिक जेम्स टकर

नागालैण्ड की पहाड़ियों में मराठा लाइट इन्फैंट्री की सैकण्ड बटालियन की बी कंपनी का नेतृत्व कैप्टन ऐटिक जेम्स टकर कर रहे थे। लक्ष्य था चकबाया और फेक के बीच लगभग ६७ कि. मी. तथा उसके आगे मेलूर तक जुड़ने वाली ३२ कि. मी. की संचार लाइन को खोलना। यह पथ उग्रवादियों के अनेक ठिकानों से आक्रान्त था। उनके ये अड्डे समाप्त कर मेलूर में अपनी सैन्य चौकी स्थापित करना ही इस बीमारी का उपचार था।

१३ जुलाई १९४७ को मराठा लाइट इन्फैंट्री में कमीशन पाने वाले कैप्टन ऐरिफ जेम्स टकर एक जाँबाज अफसर थे। २१ अक्टूबर १९२७ को जन्में कैप्टन ने अपने अगले जन्मदिन के आने के बारह दिन पूर्व ही यह असंभव-सा कार्य कर दिखाया। जिनका जन्म ही मातृभूमि की सेवा के लिए हो उनके जन्मोत्सव ऐसे पराक्रम करके ही मनते हैं। ९ अक्टूबर १९५६ को यह काम हुआ और दो ही दिन बाद उन्हें रसद सप्लाई प्राप्त करने मेलूर से फेक लौटना पड़ा। वे कंपनी लेकर चौकन्ने व सचेत मेलूर की ओर अपनी राह बढ़े जा रहे थे कि एक स्थान पर बड़ी संख्या में हथियारबंद विद्रोही उन पर चील-कौओं से टूट पड़े। बहादुरी से सामना कर कई उग्रवादी धूल में मिला दिए। १५ अक्टूबर को ये बाँके वीर मेलूर पहुँच गए। नेतृत्व ने अपनी क्षमता, वीरता, साहस व सूझबूझ से सिद्ध कर दी।

२ अगस्त १९५७ वे खुजामी से किविखू जा रहे थे। प्लाटून साथ थी कि ७० माईलस्टोन के पास घात लगाए घनी झाड़ियों में छुपे उग्रवादियों ने प्लाटून का अग्रिमदस्ता निकल जाने के बाद मशीनगनों व राइफलों से कैप्टन टकर पर गोली बरसाना शुरू कर दिया। कई गोलियाँ चेहरे व पैरों में धँस गईं पर इस साहस के पुतले ने मैदान न छोड़ा। दुर्योग से जैसे ही इनका एक ग्रेनेड उग्रवादी मोर्चे पर उछाला सामने से एक बम आकर उनकी छाती पर फटा। कैप्टन वीर गति को प्राप्त हुए। पूरे सेवाकाल में उनके साहसपूर्ण कार्यों के लिए वे अशोकचक्र से सम्मानित हुए।

(पृष्ठ ३६ का शेष)

मैंने आश्चर्य से उससे पूछा, ''अरे! तू अचानक साईकिल फेंककर कहाँ दौड़ गया था? अगर तू गिर जाता, तुझे चोट आ जाती तो?''

मेरे पोते ने मेरी ओर थोड़ी सी त्योरी चढ़ाकर, घूर कर, अपनी साईकिल उठाते हुए कहा- ''दादू! आपको नहीं पता था, मैदान के पार मैंने देखा एक लड़के की साईकिल ले जाना कठिन हो रहा था। मैंने उसको अचानक देख लिया था। मैं उसकी मदद के लिए गया था। मैं उसकी साईकिल पीछे से उठा कर उसको उसके घर तक छोड़ आया।'' मैंने पोते से कहा- ''तुझे क्या आवश्यकता थी ऐसा करने की, उसकी सहायता के लिए कोई और आ जाता। बेटा! अगर तुझे चोट लग जाती तो फिर?'' तो उसने झट से मुझे घूरते हुए कहा- ''दादू! मैंने उसे देख लिया था कि उसको सहायता की आवश्यकता है इसलिए मैं उसकी सहायता करने गया था। दादू! आपको यह नहीं पता था, उसकी सहायता करना मेरा कर्त्तव्य था।''

- गुरदासपुर (पंजाब)

सीताराम गुप्त की चटपटी कविताएँ

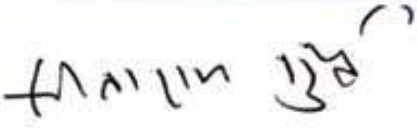

प्रस्तोता – डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

प्यारे बच्चो! अपनी कविताओं के बल पर पैंसठ वर्षों तक पत्र–पत्रिकाओं में छाए रहने वाले समर्थ कवि सीताराम गुप्त (३१ जनवरी १९२७–१० अप्रैल २०१४) का जन्म उत्तर प्रदेश के गजरौला, मुरादाबाद में लाला शिवलाल अग्रवाल और माता ब्रह्मदेवी के पुत्र के रूप में हुआ था।

जीविका को लेकर उन्हें अपनी जन्मभूमि से दूर राजस्थान जाना पड़ा और फिर वे जीवन पर्यंत वहीं के निवासी होकर रह गए। उन्हें कवि हरिऔध की 'एक बूंद' कविता बहुत प्रिय थी। यह कविता सुनाते हुए वे भावुक हो उठते थे। आप यह कविता खोजकर अवश्य पढ़ना। इससे आपको बोध होगा कि जीवन में आगे बढ़ने के लिए झिझक छोड़कर, संघर्ष करना पड़ता है। तभी सफलता मिलती है।

गुप्त जी कर्मचारी राज्य बीमा निगम में सेवारत रहे। उनको बंगला, गुजराती, मराठी, मणिपुर, उर्दू, मलयालम आदि भाषाओं का भी ज्ञान था। उन्होंने अनुवाद के माध्यम से इन भाषाओं के उत्कृष्ट साहित्य को हिंदी पाठकों को उपलब्ध कराया।

उनकी पहली कविता १९५१ में दिल्ली से प्रकाशित 'गोपाल' मासिक में छपी थी। उन्होंने बाल कथाएँ भी लिखी। प्रतिष्ठित पत्र–पत्रिकाओं में उनकी तीन हजार से अधिक रचनाएँ प्रकाशित हुईं। हाँ, पुस्तक प्रकाशन की ओर उनका ध्यान बहुत बाद में गया। उनकी पहली पुस्तक : शिशुगीत राजस्थान साहित्य अकादमी के सहयोग से वर्ष १९९९ में प्रकाशित हुई। शिशुभारती, तभी बनेगा देश महान, वीरों तुम्हें प्रणाम, नाच मयूरी, पहियों वाला घर, बाल गीत गंगा आदि उनकी चर्चित पुस्तकें हैं।

गुप्त जी बाल कविताओं में सौंदर्य के पक्षधर थे। नई कल्पना, विशिष्ट शैली और अलंकारों का प्रयोग उनके लेखन की विशेषता है। मानवीकरण अलंकार का यह अनूठा प्रयोग देखिए जिसमें गाँव को पत्र में कुछ यों लिखता है :

किया गाँव को याद शहर ने,
पत्र उसे भिजवाया।
भाई मेरे गाँव!
न मुझसे मिलने तू क्यों आया?

राजस्थान शिक्षा विभाग के लिए उन्होंने बाल साहित्य संपादन कार्य भी किया। उन्होंने राजस्थान के हिन्दी बाल साहित्यकार पुस्तक भी लिखी थी जो अभी तक अप्रकाशित है। उन्होंने 'बाल गंगा' नाम से जयपुर में एक संस्था भी गठित की थी।

राजस्थान साहित्य अकादमी, भारतीय बाल कल्याण संस्थान, कानपुर, बाल वाटिका, भीलवाड़ा, मीरा पुरस्कार, प्रयाग इत्यादि संस्थाओं द्वारा उत्कृष्ट बाल साहित्य सृजन हेतु सम्मानित गुप्त जी की रचनाएँ बाल साहित्य की धरोहर हैं।

आइए, हम यहाँ उनकी कुछ चुनिंदा कविताएँ पढ़ते हैं–

पहियों वाला घर

यदि होता पहियों वाला घर।
हमें घुमाए फिरता दिन भर।
जून महीने में जब सूरज,
बरसाता अंगारे,
घनी छाँव में ले जाता घर,
हमको नदी किनारे।
जहाँ खेलते हम लहरों से,
नाव चलाते दिन भर।
हमें बिठाए तय कर लेता,
दुनियाँ भर की दूरी।
बिना टिकट हमको ले जाता,
शिमला और मसूरी।
गरमी में कश्मीर पहुँचते,
सरदी में रामेश्वर।
गाँव, शहर के सब घर चलते,
शहर गाँव में जाते।
और गाँव के सारे घर भी
रोज शहर हो आते।
शहर-गाँव का, गाँव-शहर का
मिट जाता सब अंतर।
यदि पहियों वाला होता घर।

गंगा तट पर

गंगा-तट पर पंडेजी को
मिला एक जिजमान।
तिलक किया रेती से,
बोला इसको चंदन जान।
था जिजमान चतुर,
हाथों में उठा मेंढकी बोला-
गंगा तट की यही दक्षिणा,
गैया करके मान।

दूध में पानी

ग्वाला चला दूध देकर जब,
उससे बोली नानी,
'इतना पतला दूध आज है
मिला दूध में पानी।'
ग्वाला बोला-भैंस ताल में
जा बैठी कल शाम।
इससे दूध हुआ कुछ पतला,
पानी का क्या काम!

एक सेठजी थे कंजूस

नाम पड़ गया मक्खीचूस!
मक्खीचूस पड़े बीमार
दवा मँगाई मगर उधार।
बिल में देखे, रुपये चार,
फिर चढ़ आया उन्हें बुखार।

कार पड़ी बीमार

गप्पीमल ने गप्प लड़ाई,
खुली लॉटरी, भाई,
आज हमारे घर पर उससे
नई कार है आई।
भीड़ जमा जब हुई देखने,
गप्पी जी की कार,
गप्पी बोले अस्पताल में,
कार पड़ी बीमार।

- शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

वैज्ञानिक की कोरोना से बातचीत

– डॉ. मनमोहन प्रकाश श्रीवास्तव

वैज्ञानिक– कोरोना तुम बार–बार अपना वेरिएंट बदल लोगे तो क्या हम तुम्हें वैज्ञानिक पहचान नहीं सकेंगे? अभी तुम वैज्ञानिकों की बुद्धि वैभव से परिचित नहीं हो?

कोरोना– खूब जानता हूँ, तुम्हारी स्वार्थ बुद्धि और अहंकारी महत्वाकांक्षा ही तो मेरी जननी है।

वैज्ञानिक– चलो, मान लिया कि तुम किसी स्वार्थ चालित शोध और लापरवाही से जन्मे और पूरी दुनिया में फैल गए हो, पर अब ये बार–बार अपना स्वरूप और व्यवहार बदलकर सबको डरा क्यों रहो हो? अल्फा, बीटा, गामा, डेल्टा, एप्सिलोन, ओमीक्रोन, आमीक्रोन एक्स ई आदि रूपों में क्यों बदल रहे हो? और उनकी संक्रामकता क्षमता भी बढ़ाते जा रहे हो?

कोरोना– (हँसते हुए बोला) इस दुनिया में पैदा हुए प्रत्येक जीव का यही स्वभाव है। यदि समय परिस्थिति और वातावरण के अनुकूल अपने में बदलाव नहीं करता, तो वह जीवित ही नहीं रह सकता है। उसे बिना विकास देखे हुए इस दुनिया से चले जाना पड़ता है और जो अपने में निरंतर बदलाव करता रहता है, वह न केवल लंबे समय तक जीवित रहता है, बल्कि वंश वृद्धि करते हुए फलता–फूलता है और विकसित होता चला जाता है। मेरे बदलते वेरिएंट से वैज्ञानिक क्यों अचरज कर रहे हैं? मैं तो उन्हीं के बताए सिद्धान्तों का पालन कर रहा हूँ।

वैज्ञानिक– पर तुमने तो किसी को भी नहीं छोड़ा है– देश, प्रदेश, आयु, वर्ग, जाति, धर्म, अमीर–गरीब किसी का कोई लिहाज नहीं है तुम्हें?

कोरोना– यही तो तुम मनुष्य में और मुझमें अंतर है– मैं सबके साथ एक समान व्यवहार करता हूँ, मनुष्य की तरह लाभ–हानि, अपना–पराया, जाति–पाति, ऊँच–नीच नहीं देखता।

वैज्ञानिक– तुमने आज तक करोड़ों लोगों को पीड़ित और संक्रमित किया है, लाखों लोगों को जीवन से हाथ धोना पड़ा, न जाने कितनों की रोजी–रोटी, काम–धंधा छीनकर बदतर जीवन जीने के लिए मजबूर किया है? यह सब देखकर तुमको दुःख नहीं होता। तुम क्रूर हो, निर्दयी हो।

कोरोना– एक बात बताओ कुआँ सामने दिखाई दे रहा हो और जानते–बूझते कोई उसमें कूद जाए, तो क्या यह कुएँ का दोष है?

वैज्ञानिक– तुम कहना क्या चाहते हो साफ–साफ कहो न?

कोरोना– मानव को मालूम है कि मास्क लगाने से, दो गज की दूरी से, बार–बार हाथ धोने से, टीकाकरण से वह मुझे अपने शरीर में प्रवेश करने से रोक सकता है। यदि मानव इसका पालन नहीं करता है तो जिम्मेदार वह स्वयं ही हुआ न। हम सब देख रहे हैं कि जिस भी मनुष्य ने कोरोना प्रोटोकॉल का पालन किया है वह न केवल कोरोना से बल्कि अन्य संक्रामक रोगों से भी अपने को बचा सका है।

वैज्ञानिक– तुम बहुत ही निष्ठुर हो। पहली से लेकर तीसरी लहर में इतना नुकसान करके भी अपना रूप बदल रहे हो। तुमने मानव का जीना दूभर कर दिया है। स्वच्छंद विचरण के लिए कोरोना की तीन लहरों के बाद जो समय मिला था उसे भी अब चौथी लहर से छीनने जा रहे हो।

कोरोना– वह हँसते हुए बोला– और जो मेरे कारण ऑनलाईन नए–नए उद्योग धंधे सर्जित हुए हैं उसका क्या? मेरे कारण ही तो तुमने कम लागत में घर बैठे कैसे व्यापार किया जाता है यह भी सीखा है।

वैज्ञानिक– तुम्हारे कारण विद्यार्थियों का जो

नुकसान हुआ वह ?

कोरोना– मैंने तो केवल शिक्षा की प्रक्रिया में बदलाव मात्र किया है। पढ़ाई का एक नया ऑनलाईन विकल्प दे दिया है।

वैज्ञानिक– क्या यह भी गलत है कि तुमने न जाने कितने परिवारों को तबाह किया, बच्चों को अनाथ किया है ?

कोरोना– यह सही है कि मेरे कारण कई परिवारों को दंश झेलना पड़ा है, पर यह भी तो सही है कि मेरे कारण ही मनुष्य ने आज परिवार, रिश्तों और आस–पड़ोस के महत्व को समझा है। कम साधनों में काम करना, रहना सीखा है। भारतीय सनातन संस्कृति जिसे तुम पश्चिम संस्कृति की चकाचौंध के कारण अवैज्ञानिक मानकर भूलते जा रहे थे, की वैज्ञानिकता आज मेरे कारण पुन: प्रमाणित हुई है। मेरे डर से चिकित्सालयों की व्यवस्था सुधरी है। रोजगार, शिक्षा और शोध के नए–नए विकल्प सामने आए हैं। परिवारों को साथ रहने का अवसर मिला है। प्रकृति और पर्यावरण शुद्ध हुए हैं, जैवविविधता समृद्ध हुई है।

अब तुम व्यर्थ के प्रश्न करना छोड़ो और जाकर अपनी दुनिया को समझा दो–मनुष्य जब–जब मेरे जैसे जीवों का दूसरों के विनाश के लिए, जैविक हथियार के रूप में बनाने और उपयोग करने का प्रयत्न करेगा, तब–तब स्वयं मानव का ही विनाश निश्चित होगा। वैज्ञानिक प्रगति के आधार पर मनुष्य अपने आपको सर्वोच्च मानकर प्रकृति विजय का प्रयत्न न करे। प्रकृति के साथ संबंध रखते हुए सहज जीवन जीए। विनाश से बचने का एक ही उपाय है कि विज्ञान और तकनीक का प्रयोग जीव मात्र के कल्याण के लिए किया जाए मनुष्य को भस्मासुर वाली कहानी अपने दिमाग में हमेशा याद रखनी चाहिए।

वैज्ञानिक– तुम भोले बनने का प्रयत्न मत करो कोरोना, तुमने मानव जाति का सबसे अधिक

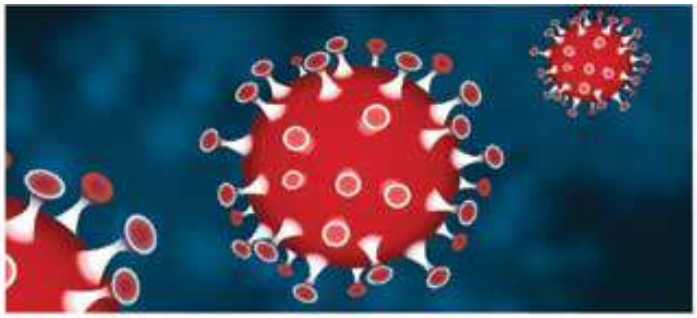

विनाश किया है विकास की गति को धीमा किया है।

कोरोना ने सहजता उत्तर दिया कि मुझसे अधिक तो प्रतिवर्ष इंसान कई बीमारियों, घटनाओं, प्राकृतिक प्रकोपों, नशावृत्ति आदि से जान गँवाता है। मुझे समाप्त करके के लिए तुम लोग जितना प्रयास कर रहे हो उतना यदि मलेरिया, केंसर, धूम्रपान, एड्स, सड़क दुर्घटना, आत्महत्या आदि को रोकने का करते तो मानव समाज के लिए अच्छा होगा।

वैज्ञानिक– संसार में इतने सारे जीव–जंतु हैं फिर तुमने मनुष्य को ही अपने फलने–फूलने के लिए क्यों चुना ?

कोरोना– चूँकि मानव ने मुझे गलत उद्देश्य से सृजित किया है इसलिए मैं उसे सबक सिखाना चाहता था, ताकि वह भविष्य में ऐसा ना करें।

वैज्ञानिक– तुम अब दुनिया के लगभग सभी देशों में तेजी से अपनी वंशवृद्धि कर रहे हो, हम तुम्हारे नए वेरिएंट को समझ भी नहीं सके हैं इसलिए तुम्हारी भयावहता की कल्पना से बहुत चिंतित हैं।

कोरोना– तुमने स्वयं अनुभव किया होगा कि मेरा नया रूप पहले से अधिक संक्रामक होते हुए भी अधिक शक्तिशाली नहीं है। तुम तो बस मानव को यह संदेश दो कि सभी बच्चे, युवा, वयस्क, वृद्ध कोरोना प्रोटोकॉल का पूरा पालन करें। टीकाकरण करवाएँ और मर्यादा में रहते हुए प्रकृति सम्मत जीवन जीये, तो मैं भी अपने पर नियंत्रण रखते हुए, बिना कोई नुकसान पहुँचाए प्रकृति का अंग बन कर रहूँगा जैसे अन्य वायरस रहते हैं।

– इन्दौर (म. प्र.)

गोपाल का दो मंजिला मकान

– तपेश भौमिक

गोपाल कच्चे मकान में रहते थे। बारिश के दिनों आँगन में इतनी कीचड़ जम जाती कि उसे पार कर घर तक जाना उनके लिए कठिन हो जाता। वैसे वे खड़ाऊँ पहनते थे लेकिन कीचड़ पर चलना उनके लिए और भी कठिन काम हो जाता। कदम–कदम पर कीचड़ में खड़ाऊँ अटक जाता तो फिसल कर गिरने की नौबत आ जाती।

एक दिन ऐसा हुआ कि गोपाल आँगन की कीच में चारों खाने चित्त पड़ गए! उस समय उनकी पत्नी रसोई बना रही थीं। उन्होंने यह हादसा देखा तो चिल्ला कर कहने लगीं– ''गिर पड़े! भगवान ने ठीक ही किया है; पत्नी की बात न मानने का फल यही होता है। कितनी बार कहा कि राज–दरबार में जाते हैं तो दरबारियों–सा रहन–सहन अपनाओ। सारे दरबारियों के पक्के मकान हैं, आप ही एक हों, जो कि महाराज के प्रिय–पात्र होते हुए भी पक्का मकान नहीं बना सके।''

गोपाल ने कराहते हुए गुस्से में कहा– ''मेरे गिरने पर तुम क्या उठाओगी, उल्टा मेरा मजाक बना रही हो! मैं केवल पक्का ही नहीं दो मंजिला मकान बनाकर दिखा दूँगा।'' इस बात पर गोपाल की पत्नी ने मुँह बनाकर केवल यह कहा कि– ''अब इस जीवन में तो होने से रहा।''

दूसरे दिन गोपाल दरबार में पहुँचकर सबसे पहले महाराज के साथ–साथ दरबारियों को अगले दिन अपने घर आने का न्यौता दे आए। घर लौटकर महाराज के स्वागत के लिए उन्होंने आँगन में एक छोर पर बाँस–फूस से एक मचाननुमा दो मंजिली कुटिया बना डाली।

उस दिन अपने एक साले साहब को बुलाकर उन्हें दरबान की पोशाक पहनाकर मचान की निचली मंजिल पर एक कुर्सी पर बैठा दिया। उस दिन वे दरबार में नहीं गए और सुबह से ही भोजन के प्रबंध में लग गए। साले साहब की पत्नी भी रसोई के काम में हाथ बंटा रही थीं। उधर बारिश भी होती जा रही थी। चूँकि महाराज गोपाल को खूब चाहते थे इसलिए दोपहर होते ही बारिश रुकी नहीं कि उनकी सवारी दरबारियों के साथ निकल पड़ी। कुछ ही देर में सवारी गोपाल के दरवाजे पर आकर ठिठक गई। स्वागत द्वार पर कीचड़ की भरमार थी। महाराज बाहर से ही चिल्लाने लगे, ''गोपाल! गोपाल!'' तभी गोपाल के साले साहब ने महाराज को प्रणाम करते हुए कहा– ''महाराज! गोपाल जी अपनी प्रतिष्ठा के अनुकूल दो मंजिली मकान न होते हुए भी अपनी क्षमता के

अनुसार बाँस-फूस से ही एक दो मंजिला मकान बनाकर आपके स्वागत के लिए तैयार खड़े हैं। बाँस की सीढ़ी लगी हुई है, आप ऊपर चले जाइए।''

''अरे मैं तो गिर पड़ूँगा! आँगन में कीचड़! गोपाल ऊपर! सारे दरबारी आयें हैं सज-धजकर। अरे जरा लिहाज तो कर।'' महाराज ने चकित होकर कहा। तभी गोपाल ने ऊपर के मचान से कहा- ''जय हो महाराज की।''

''गोपाल तुम कहाँ हो ?'' महाराज ने रोष भरे शब्दों में कहा।

''महाराज! मैं यहाँ हूँ; ऊपर की मंजिल पर। बाँस की सीढ़ी लगी हुई है, आप ऊपर चले आइए।'' गोपाल ने ऊँची आवाज में नम्रता के साथ कहा।

''अरे पगले! तूने यह क्या किया है।'' महाराज ने प्रेमपूर्वक कहा।

''महाराज! सारे दरबारियों के पास दो मंजिला मकान हैं, मेरे पास नहीं है। मैंने आपकी प्रतिष्ठा का सम्मान करते हुए यह मकान स्वागत-सत्कार के लिए आपातकालीन स्थिति में बनवाया है। अब जब आपकी कृपा दृष्टि होगी, तब पक्का दो-मंजिला मकान बनवा लूँगा।'' गोपाल ने मचान के ऊपर से कहा।

''अरे भाई! तुम उतरो तो सही, कल ही तुम्हें राजकोष से धन दिया जाएगा ताकि तुम दो मंजिला पक्का मकान बनाकर हमें आमंत्रित कर सको।'' महाराज ने बड़े प्रेम से कहा। गोपाल बाँस की सीढ़ी के सहारे बड़ी सावधानी के साथ उतरने लगे। तभी महाराज ने दरबारियों को सम्बोधित करते हुए कहा-

''देखो, बेचारे का हृदय कितना बड़ा है। इसकी ईमानदारी से तो तुम सबको सीख लेनी चाहिए। स्वयं झोपड़ी में रहकर मेरे स्वागत के लिए बाँस का ही सही, दो मंजिला कुटी खड़ी कर ली है। बेचारा स्वयं गरीब है पर दिल का धनी है। पूरे राज दरबार को ही उसने आमंत्रित किया है। ऐसे दिलवाले के पास ही दौलत होनी चाहिए।'' महाराज ने उसकी प्रशंसा के पूल बाँधते हुए कहा।

गोपाल ने सबको इस घोषणा पर रसगुल्ले बाँटें और महाराज से अपनी भूल-चूक के लिए क्षमा माँगी। सारे लोग ''धन्य है, धन्य है'' कहते हुए प्रस्थान कर गए।

गोपाल की पत्नी ने तभी आकर पूछा- ''हे पतिदेव! आपको उस दिन चोट तो नहीं लगी थी ?''

''नहीं जी! तुम उस दिन यदि मेरा दिल न दुखाती तो मेरी यह योजना रंग नहीं लाती। इससे पहले कई बार मैंने महाराज के पास पक्के मकान के लिए विनती की थी पर वे 'आज नहीं कल' कहकर टालते जा रहे थे।''

- कूचबिहार (पं. बंगाल)

वीनू का बदलाव

– प्रभा पारीक

वीनू एक नटखट बच्चा है। कक्षा तीन में पढ़ता है। कक्षा में लगातार बैठे रहकर पढ़ने से बड़ी सजा उसके लिए यह थी कि उसे ४५ मिनट की कक्षा में एक स्थान पर बैठे रहना पड़ता था। सारे बच्चे आराम से बैठकर पढ़ते हैं पर वीनू बस थोड़ी ही देर के बाद इधर–उधर होने लगता। वह किसी का बस्ता छेड़ता तो किसी की बोतल में से पानी पीने लगता। अन्य बच्चों की शिकायत से शिक्षकों ने उसे अकेले अलग बैठाना प्रारम्भ कर दिया था। वैसे वह था पढ़ने में अति तेजस्वी, कक्षा में घूमते, मस्ती करते हुए भी बातें अच्छी तरह से सीख रहा था। उसके अक्षर बहुत सुंदर थे जो सबके आकर्षण का केन्द्र थे। शिशु कक्षाओं से लेकर आज तक प्रत्येक शिक्षक वीनू के स्वभाव को अच्छी तरह समझने लगे थे। सभी शिक्षक उसे नटखट समझकर उसके साथ कठोर व्यवहार करते थे। आखिर सभी का धैर्य भी समाप्त हो चुका था।

वीनू के साथ उसकी कक्षा में एक छात्रा शालिनी भी थी। वह देखती की कक्षा में लगातार वीनू का इस तरह शिक्षक का कहना नहीं मानना। शिक्षक का उसे सब बच्चों से अलग बैठाना उसे बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता। वह घर आकर अपनी माँ को सारी बातें विस्तार से बताती थी। शालिनी की माँ मनोचिकित्सक थी वह सदा शालिनी की सभी बातें ध्यान से सुनती थी। एक दिन शाला की आधी छुट्टी के समय वीनू की दौड़–भाग के कारण अचानक एक बच्चा बीच में आ गया और इन दोनों की टक्कर से जो बच्चा गिरा उसे चोट लग गई। वीनू के प्रति पूर्व धारणा के कारण किसी ने भी वीनू की बात नहीं सुनी।

वह डाँट खाने के बाद अकेला बैठा रोता रहा। उस दिन शाला की छुट्टी के समय बस में घर जाते समय वीनू व शालिनी पास–पास बैठे थे। वीनू ने शालिनी को बताया कि उसने आज खाना भी नहीं खाया। शालिनी ने उसे अपना टिफिन का बचा हुआ खाना दिया। उस दिन शालिनी भी उदास थी उसने शाम को माँ के आने पर पूरी बात उन्हें बताई।

कुछ दिन बाद शाला में अभिभावकों व शिक्षकों की बैठक बुलाई गई। वीनू के पिताजी भी आए थे। हर बार की तरह वीनू के पिताजी मानसिक रूप से तैयार थे कि सभी शिक्षक मीनू की शिकायत उनसे करेंगे और हुआ भी ऐसा ही। जब उसके पिताजी यह सब सुन रहे थे तब शालिनी की माँ डॉ. शुभा भी वहीं थी।

उन्होंने सभी शिक्षकों की बातें ध्यान से सुनी और वह तो रोज ही अपनी बेटी से भी घटनाएँ सुनती

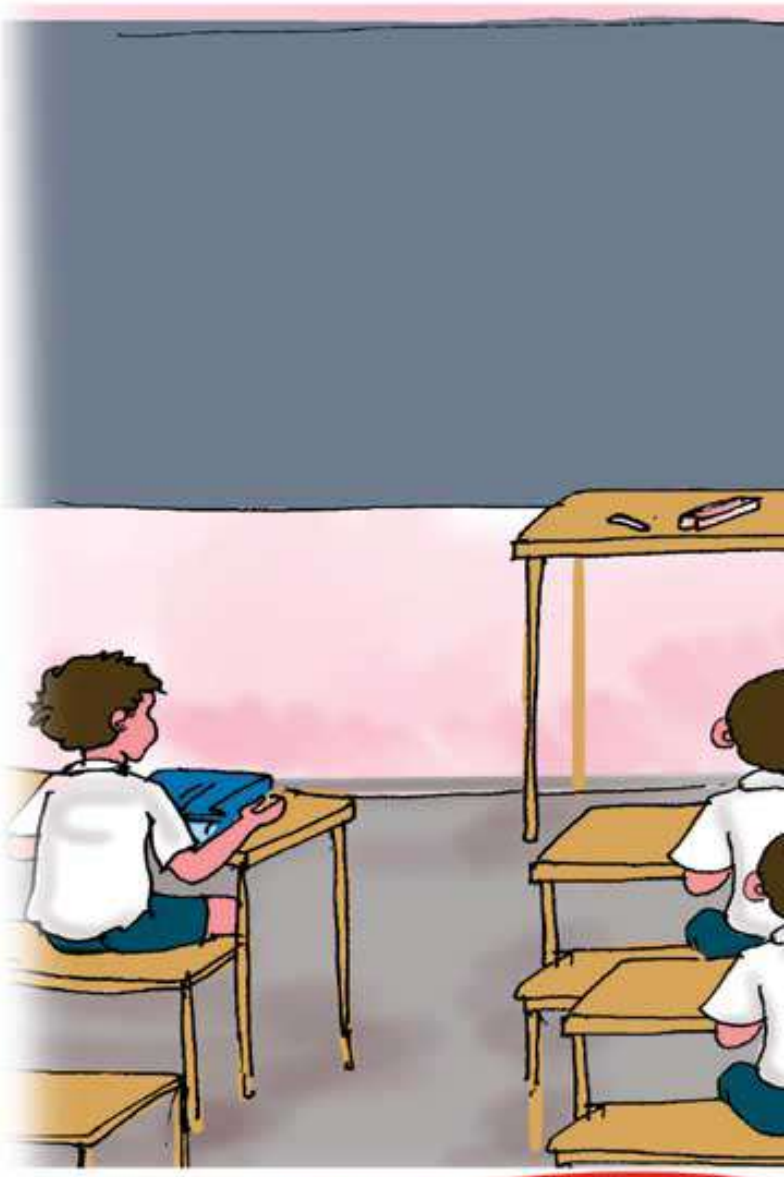

थी। उस दिन उन्हें लगा उन्हें इस बच्चे का बचपन बचाना होगा।

उन्होंने प्राचार्य कक्ष में जाकर प्राचार्य जी को सारी बात समझाई और उन्होंने वीनू के पिता को भी वहाँ बुला लेने का आग्रह किया।

प्राचार्य जी को उन्होंने अपना परिचय देते हुए बताया कि आज मैं अपनी बेटी शालिनी के बारे में नहीं वरन उसकी कक्षा के बच्चे वीनू के बारे में आपसे बात करने आई हूँ। उन्होंने प्राचार्य का विश्वास प्राप्त करके वीनू के बारे में उनके पास जितनी जानकारी थी वह उन्हें बताई। उन्होंने कहा कि मैं शिक्षक के व्यवहार के बारे में भी जानती हूँ और वीनू की गतिविधियों के बारे में भी।

प्राचार्य जी ने डॉ. शुभा की बात इसलिए ध्यान से सुनी क्योंकि वह कुछ अलग प्रकार से बात कर रही थी। इतने में वीनू के पिताजी भी आ गए।

प्राचार्य की अनुमति से डॉ. शुभा ने वीनू के पिताजी से कुछ प्रश्न पूछे जिसका उन्होंने घबराते हुए उत्तर दिया। डॉ. शालिनी ने उन्हें आश्वस्त करते हुए यह विश्वास दिलाया कि चिंता ना करें उनका बेटा सामान्य बच्चों की तरह ही है। बहुत कुशल बच्चा है उसके स्वभाव व आदतों का कारण बताते हुए कहा कि परिवार में वह माता के अभाव के कारण स्वयं को असुरक्षित अनुभव करता है।

उसके साथ किसी हम उम्र के खेलने वाले मित्र के अभाव के कारण वह अकेलापन अनुभव करता है। डॉ. शुभा का कहना था कि आया का व्यवहार भी उसके साथ बहुत कड़क है। इसलिए वह अपने में खोया रहता है। डॉ. शुभा ने कुछ व्यायाम और कुछ व्यवहारगत सुझाव दिए। उन्होंने वीनू के पिताजी को आश्वस्त किया। वीनू के पिताजी ने डॉ. शुभा के सुझावों का पालन करने का वचन दिया।

शुभा जी ने प्राचार्य को भी कुछ बातें बताईं जो उन्हें सभी शिक्षक को बतानी थी। उनके अनुसार कुछ बच्चे विशेष होते हैं क्योंकि वह विशेष परिस्थितियों से गुजर रहे होते हैं।

हम उन परिस्थितियों को समझे बिना उनके साथ कठोर व्यवहार करते हैं जो कि गलत है। और इस तरह धीरे–धीरे शिक्षकों का व्यवहार भी मीनू के प्रति बदलने लगा।

अब वीनू सबके साथ बैठता। बच्चे भी बात–बात कर शिकायत नहीं करते। पिताजी भी उसे पूरा समय देते। और उन्होंने किसी स्नेह करने वाली आया का चुनाव किया। कक्षा का शैतान बच्चा अब होशियार वीनू बन गया। कुछ बातें शिक्षकों को भी विशेष बनाती हैं जिनसे वह अच्छे शिक्षक बन जाते हैं।

– भरूच (गुजरात)

कविता

लोरी

– डॉ. अलका अग्रवाल

निंदिया आ जा, निंदिया आ जा।
बिटिया जागे, उसे सुला जा।
नन्ही अखियाँ, राह देखती,
जागी जागी, बाट जोहती।
सपनों की नगरी दिखला जा।
निंदिया आ जा, निंदिया आ जा।
सुंदर सपने, सुंदर परियाँ,
खेल–खिलौने, फूल और कलियाँ।
अद्भुत परी लोक दिखला जा।
निंदिया आ जा, निंदिया आ जा।
चंदा, तारे, नील गगन में,
बादल काले, इस अंबर में,
आ जा चंद्रलोक दिखला जा।
निंदिया आ जा, निंदिया आ जा।

– जयपुर (राजस्थान)

एक महिला बहुत घबराई हुई थाने पहुँची। थानेदार ने जब घबराहट का कारण पूछा तो वह बोली, ''मेरे पति कार्यालय के कार्य से शहर से बाहर गए हुए हैं। मैं आज सुबह जब सो कर उठी तो देखा कि मेरे कमरे की अलमारी खुली थी। मेरा कीमती सामान और रुपए चोरी हो चुके थे। मेरे दोनों हाथों के तोते उड़ गए....''

थानेदार ने कलम उठाई और तुरंत पूछा– ''कुल कितने तोते थे?''

*****

पहली औरत दूसरी औरत से, ''तुम्हारे पति का क्या नाम है?''

दूसरी औरत, ''वही जिससे बसें व गाड़ियाँ चलती और रुकती हैं।''

पहली औरत, ''मैं समझी नहीं।''

दूसरी औरत, ''हरी लाल।''

*****

जब– तुमने ज्वेलरी की दुकान के शो–केस में रखा मोतियों का हार क्यों चुराया?

चोर– साहब, वहाँ पर लिखा था– 'इस सुनहरे अवसर को मत चूकिये।'

*****

महिला– ये लिपस्टिक कितने की है?

दुकानदार– सत्रह रुपए की...।

महिला– मैं पचास रुपये से एक रुपया भी ऊपर नहीं दूँगी... देना है तो दो।

दुकानदार– बहन जी! आपने गलत सुना मैंने सत्तर नहीं सत्रह रुपए बोला है।

महिला– बारह रुपए का देना है तो बात करो।

एस. के.

– समीर गांगुली

करीब १०–१२ मिनट तक सोमेश बेंच के दूसरे सिरे पर रखे उस चमड़े के बैग को एक लालसा से देखता रहा। काश! उसके पास भी ऐसा बैग होता। फिर किताब–कॉपी–प्रैक्टिकल फाइल भरकर कॉलेज ले जाना कितना आसान हो जाता।

थोड़ी देर पहले बारिश हो चुकी थी। सर्दी की बारिश, उस पर शाम का समय इसलिए अंधेरा छाने लगा था और पार्क भी लगभग खाली हो चला था। जॉगिंग ट्रैक पर बस दो–चार लोग ही दिखाई दे रहे थे।

'शायद कोई बैग भूलकर चला गया।' सोमेश ने यह सोचते हुए बैग की तरफ सरकते हुए हाथ बढ़ाया और दूर–पास किसी को न पाकर बैग को उठाकर अपनी गोद में रख लिया। फिर उसे धीरे से खोला, अंदर दो–तीन किताबें, एक लंच–बॉक्स और एक मोटा लिफाफा था। लिफाफा खोलते ही उसका दिल जोर से धड़क उठा। लिफाफे में पाँच सौ और दो हजार के अनेक नोट थे। उसने तुरन्त बैग बंद कर दिया। बैग बेंच पर वापस रखा और खड़ा हो गया। सिर उठा कर चारों ओर देखा और फिर बैग को एक झटके से उठाकर तेजी से पार्क के बाहर निकल आया।

पार्क के बाहर रखी साईकिल उठायी और ताबड़तोड़ पैडल मारते हुए अपने होस्टल आ पहुँचा।

कमरे में दोनों साथी उपस्थित थे। सोमेश के हाथ में लेदर बैग देखकर वे चौंके।

सोमेश बोला– ''पार्क में पड़ा मिला है।''

एक रूममेट ने पूछा– ''क्या है इसमें?''

सोमेश ने उत्तर दिया– ''पैसे!''

दूसरे ने पूछा– ''कितने?''

सोमेश– ''पता नहीं, गिने नहीं... शायद ४०–५० हजार!''

पहले ने अगला सवाल किया– ''क्या करोगे?''

सोमेश बोला– ''यही सोच रहा हूँ।''

दूसरा हँसकर बोला– ''सोचना क्या! ऊपर वाले का उपहार समझकर जेब में रख! और हमें भी पार्टी दे।''

इस बीच सोमेश ने पैकेट बाहर निकाला, और पैकेट पर लिखे पते को पढ़ने लगा। संक्षिप्त पता इस प्रकार था– एस. के., ?–५ बसंत विहार, हरिनगर, पानी के कारण ५.... के आगे का अक्षर ए, बी, सी या डी मिट गया था। सोमेश ने दो पल कुछ सोचा, फिर बैग उठाकर कमरे से बाहर निकल गया। दोनों रूममेट ने एक–साथ आवाज लगायी, ''कहाँ जा रहे हो?''

सोमेश ने पीछे मुड़े बिना जवाब दिया– ''बैग लौटाने!''

थोड़ी देर बाद सोमेश वसंत विहार के बंगला नं. ए–५ के सामने खड़ा था।

गेट के बाहर साइकिल खड़ी कर नेम प्लेट पढ़ी। सरफराज खान यानी एस. के. वह दरबान से बोला– ''साहब से मिलना है।''

दरबान ने उसे सिर से पैर तक देखते हुए कहा– ''नए हो, मगर इस काम के लिए थोड़े छोटे लगते हो, खैर मुझे क्या? सीधे चले जाओ। मालिक ड्राईंग रूम में बैठे हैं।''

वह सीधे ड्राईंग रूम में चला गया। अंदर सोफे पर बैठा एक खतरनाक किस्म का आदमी शराब पी रहा था। उसे देखते ही गरजा, ''क्या काम है?''

सोमेश धीरे से बोला– ''मुझे यह बैग पार्क में मिला था। क्या यह आपका है?''

इस बीच सोमेश की नजर दीवार पर लगी उस आदमी की बचपन और जवानी की तस्वीरों पर पड़ी, सोमेश को लगा, कभी यह आदमी भी उसके जैसा दिखता होगा।

वह आदमी उसी आवाज में बोला– ''नहीं!

क्या है इसमें?''

सोमेश बोला– ''पैसे! शायद चालीस पचास हजार।''

अब उस आदमी ने आवाज धीमी करते हुए कहा– ''कोई बात नहीं, बच्चे! मगर मेरे बिजनेस पार्टनर बनकर इस पैसे को तुम दुगुना–तिगुना कर सकते हो।''

सोमेश ने पूछा– ''कैसे?''

वह बोला– ''मुझसे माल खरीदो। अपने इलाके में बेचो और अमीर बन जाओ। मेरा नेटवर्क तुम्हारी मदद करेगा।''

सोमेश ने फिर पूछा– ''माल का मतलब?''

अब सोमेश ने देखा उस आदमी का एक हाथ नहीं था।

वह आदमी खतरनाक हँसी हँसते हुए बोला– ''गाँजा!''

सोमेश काँप उठा, ''नहीं–नहीं मैं यह सब नहीं कर सकता।''

और सोमेश अगले ही पल गेट के बाहर था। वह समझ गया था कि वह गलत पते पर आया था। अब वह गली में मकान नं. बी–५ ढूँढ़ रहा था।

मकान नं. बी–५ को देखकर लगा, कि इसके मालिक को बागवानी या साफ–सफाई का कोई खास शौक नहीं है। दरवाजे पर कोई दरबान भी नहीं था। सो सोमेश ने मकान के दरवाजे के पास जाकर घंटी बजायी।

कुछ समय बाद दरवाजा खुला, एक नौकरनुमा आदमी प्रकट हुआ। सोमेश ने पूछा– ''साहब हैं?''

सवाल के जवाब में सवाल हुआ– ''आप कौन? गाँव से आए हैं? शंकर मालिक के छोटे भाई लगते हैं शक्ल से।''

सोमेश ने इस बात का उत्तर दिए बिना पूछा– ''साहब कहाँ हैं?''

वह आदमी बोला, ''जेल में!''

सोमेश ने हैरानी से पूछा– ''जेल में क्यों? और कब से?''

वह आदमी फिर झुककर बोला– ''भैया छः महीने हो गए। लालच का फल। लालच ही तो अपराध कराती है और अपराध का फल तो भुगतना ही पड़ता है।''

तब तक सोमेश समझ चुका था कि यह वह आदमी नहीं है जिसे वह खोज रहा था। वह बैग लेकर बाहर निकल गया।

अब उसकी तलाश थी सी–५, लेकिन वह मकान ढूँढ़ते–ढूँढ़ते उसके पसीने छूट गए। इधर अब रात भी हो चली थी। सर्दी की रात, ठंड से सोमेश की

कँपकँपी छूट रही थी। और अँधेरे में मकान–ढूँढ़ना कठिन लग रहा था। रास्ते में भी कोई चलता–फिरता दिखाई नहीं दे रहा था। कुछ देर बाद, एक स्कूटर वाले को रोककर पूछा तो उसने कहा– ''सीधे निकल जाओ! शायद यह कलेक्टर साहब के बंगले का नंबर है।''

और अब सोमेश, कलेक्टर साहब के बंगले सी–५ के सामने था। आश्चर्य यहाँ भी नाम एस. के. यानी सूर्य कुमार।

गेट पर उपस्थित सुरक्षाकर्मी को जब उसने कलेक्टर साहब से मिलने का कारण बताया तो दरबान ने तुरंत उसे कलेक्टर साहब तक पहुँचा दिया।

कलेक्टर साहब को पहली नजर देखते ही उसे दोहरा आश्चर्य हुआ। पहला यह कि उनकी आयु उसकी आशा से काफी कम भी और दूसरा यह कि उनकी शक्ल उससे काफी मिलती–जुलती थी। शायद कलेक्टर साहब के मन में भी उसे देखकर यही विचार आया था।

उसे बैठाकर कलेक्टर साहब उसके बारे में पूछताछ करने लगे। उसकी पढ़ाई, कॉलेज, पृष्ठभूमि, भविष्य के इरादे।

तभी कलेक्टर साहब की पत्नी दो कप कॉफी लेकर आ गई। उसने नमस्ते करके उनसे कॉफी ले ली।

लेकिन बात बढ़ाने के लिए उसने कलेक्टर साहब से फिर पूछा, ''सर! यह बैग आपका ही है न?''

कलेक्टर साहब हँसकर बोले, ''नहीं, यह मेरा नहीं। तुम्हें इसे पुलिस स्टेशन में जमा कराना चाहिए और इसकी पावती लेनी चाहिए। मैं तुम्हें पुलिस स्टेशन तक छोड़ देता हूँ।''

सोमेश बोला, ''सर! मैं साइकिल से चला जाऊँगा।''

कलेक्टर साहब बोले, ''चिंता मत करो, जीप में तुम्हारी साइकिल भी आ जाएगी।''

और कुछ ही पल में सोमेश पुलिस स्टेशन में था। कलेक्टर साहब उसे बाहर ही छोड़कर चले गए।

जैसे ही वह पुलिस स्टेशन में पहुँचा, इंस्पेक्टर के सामने बैठा एक व्यक्ति सोमेश के हाथ में लेदर बैग को देखकर राहत भरी सांस लेते हुए चिल्लाकर बोला, ''साहब यही है मेरा बैग।''

अब इंस्पेक्टर, वह आदमी और सोमेश तीनों एक–दूसरे की ओर देख रहे थे। तीनों की आँखों में एक जैसी चमक थी मानवता की।

सोमेश ने इंस्पेक्टर के हाथ से उस व्यक्ति को लैदर बैग सौंप दिया। लिफाफा खोलकर नोट गिनकर

उस आदमी ने कहा–

''पूरे हैं! पार्क में मिला ना? एक लड़की झूले से गिर गई थी। उसका सिर फट गया था, सो उसे अस्पताल पहुँचाने की हड़बड़ी में बैग भूल गया।''

अब इंस्पेक्टर ने प्रश्न किया, ''बेटा! इतनी रात क्यों हो गई?''

सोमेश बोला, ''सर! इनका पता पानी से मिट गया था, सो मैं इनको ढूँढ़ते हुए गलत घरों में पहुँच गया था।''

उस आदमी ने लिफाफे को दोबारा पढ़ते हुए कहा, अरे हाँ ३५ वसंत विहार होना चाहिए था, ३ तो पढ़ा ही नहीं जा रहा है।''

सोमेश मुस्कुराकर बोला, ''जी! मैं ए, बी, सी–५ मकानों में पहुँच गया, अंत में कलेक्टर साहब के बंगले पर पहुँचा तो उन्होंने मुझे अपनी जीप में बैठाकर यहाँ तक छोड़ा।''

इंस्पेक्टर ने थोड़ा चौंकते हुए कहा, ''कलेक्टर साहब! स्वयं छोड़कर गए। लेकिन थाने के अंदर नहीं आए। देखो इसे कहते हैं अच्छे प्रशासक का गुण। दूसरों पर भरोसा करो। सबको ईमानदारी दिखाने का अवसर दो।

बेटा! तुम विद्यार्थी हो ना, खूब मन लगाकर पढ़ो और एक दिन एस. के. साहब जैसा कलेक्टर बनो।''

सोमेश हाथ जोड़कर छात्रावास लौट आया। दोनों साथी सो चुके थे। खाना खाकर बिस्तर पर लेटे–लेटे वह सोचने लगा–

क्या आज उसे उसके ही भविष्य के तीन रूप दिखाए गए हैं? क्या ये तीन एस. के. भविष्य में उसके संभावित चेहरे हैं?

वह अपने कर्मों के आधार पर इनमें से एक बनेगा, तब तो कलेक्टर सूर्य कुमार उर्फ एस. के. वाला चेहरा सबसे सुखद है।

फिर उसे रेवा का चेहरा भी याद आ गया और वह आयएएस/यूपीएससी के बारे में सोचने लगा।

– मुंबई (महाराष्ट्र)

शिशु गीत

रोटी का रंग

–रामावतार चेतन

स्व. रामावतार चेतन बाल साहित्य में वरिष्ठ क्रम के रचनाकार हैं। ६ जुलाई १९२८ को बिंदकी (फतेहपुर उ. प्र.) में जन्में चेतन जी ४ सितम्बर १९८६ को स्वर्ग सिधारे। प्रस्तुत है उनकी एक कविता–

पण्डित जी ने खाई रोटी,
उनकी बड़ी हो गई चोटी।
लालाजी ने खाई रोटी,
उनकी तोंद हो गई मोटी।
बाबूजी ने खाई रोटी,
उनकी कलम हो गई छोटी।

साधू जी ने खाई रोटी,
उनकी चंपत हुई लंगोटी।
रोटी का हैं रंग निराला,
बाबू, साधू, पंडित, लाला।

– बिंदकी
फतेहपुर (उ. प्र.)

तेरे पौधे मेरे पौधे

चित्रकथाः देवांशु वत्स

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२१-२०२३ | आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०६/२०२२ | प्रेषण तिथि ३०/०६/२०२२ | प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

जुलाई २०२२ के अंक से देवपुत्र का संशोधित मूल्य निम्नानुसार रहेगा।

एक अंक ३०/- वार्षिक सदस्यता २००/- १५ वर्षीय सदस्यता २०००/-

एक ही पते पर १० या अधिक अंक एक साथ मँगवाने पर वार्षिक शुल्क १५०/- प्रति अंक

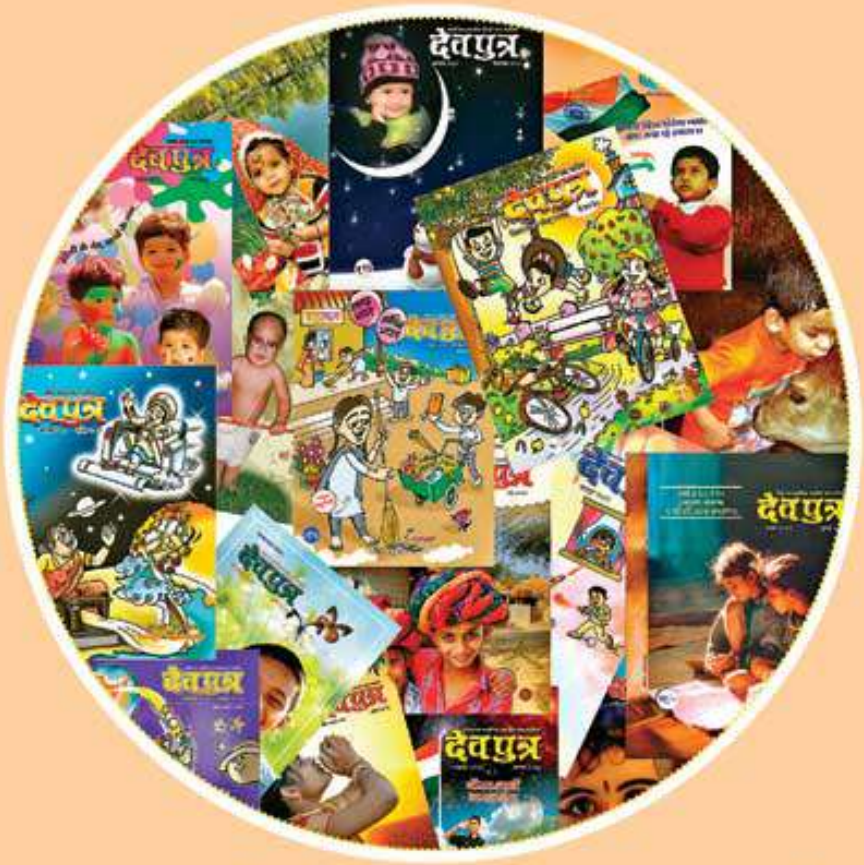

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल

'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अब और आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

देवपुत्र अब Jio Net पर भी !

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना